# खंड 2
# प्रारंभिक मनोविज्ञान

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# इकाई 3 साहचर्यवाद*

संरचना


3.0 प्रस्तावना

3.1 ब्रिटेन का अनुभववाद

3.2 ब्रिटेन के अनुभववादियों का योगदान

- 3.2.1 थॉमस हॉब्स
- 3.2.2 जॉन लॉक
- 3.2.3 जार्ज बर्कले
- 3.2.4 डेविड ह्यूम
- 3.2.5 डेविड हर्टले
- 3.2.6 जेम्स मिल
- 3.2.7 जॉन स्टुआर्ट मिल
- 3.2.8 एलेक्ज़ेंडर बेन

3.3 समकालीन मनोविज्ञान में अनुभववाद

3.4 साहचर्य और अधिगम सिद्धान्तवादी

- 3.4.1 हर्मन एबिन्गहास
- 3.4.2 इवान पावलव
- 3.4.3 एडवर्ड ली थार्नडाइक

3.5 साहचर्यवाद की समकालीन भूमिका

3.6 सारांश

3.7 मुख्य शब्द

3.8 पुनरावलोकन प्रश्न

3.9 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

3.10 चित्रों के संदर्भ

3.11 ऑनलाइन स्त्रोत


## सीखने के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप :

- साहचर्यवाद के सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे;
- ब्रिटेन के अनुभववाद के दर्शन की व्याख्या कर सकेंगे;
- ब्रिटेन के सभी अनुभववादियों के योगदान की व्याख्या कर सकेंगे;
- ज्ञानार्जन के सिद्धान्तकारों का साहचर्यवाद में योगदान जान सकेंगे; तथा
- उद्दीपन एवं प्रतिक्रियाओं के साहचर्य का वर्णन कर सकेंगे।


* डॉ. सैफ़ आर. फ़ारूकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

## 3.0 प्रस्तावना

साहचर्यवाद मनोविज्ञान की सबसे पुरानी विचारधारा मानी जाती है। मनोविज्ञान की संगत विचारधारा के रूप में इतनी नहीं जानी जाती है जितनी सिद्धांत के रूप में जानी जाती है। मनोविज्ञान की सभी प्रमुख विचारधाराओं में साहचर्यवादी विचारों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा *संरचनावाद* साहचर्यवादी विचारों से अत्यधिक प्रभावित है।

साहचर्यवाद का सिद्धांत बताता है कि मानसिक प्रक्रियाएँ जो एक मानसिक अवस्था, से दूसरी मानसिक अवस्था के बाद उत्पन्न होती हैं, साहचर्य से क्रियान्वित होती हैं। साहचर्यवाद की एक प्रमुख धारणा यह है कि ''जटिल विचार अपेक्षाकृत सरल विचारों के साहचर्य से उत्पन्न होते हैं''। ब्रिटेन के अनुभववादी मुख्य रूप से मानसिक गतिविधि की व्याख्या करने के लिए साहचर्यवादी सिद्धांतों का उपयोग करते थे। विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारकों की व्याख्या करने में साहचर्य स्थापित करने के लिए यह व्यापक रूप से प्रयोग की जाने लगी। मन की गतिविधि की व्याख्या करने के लिए विशुद्ध दर्शन से अधिक कुछ प्रयोग करने के प्रयासों में ब्रिटेन के अनुभववादी उत्तर मनोवैज्ञानिक विकास का अनुमान लगाते थे। मानसिक गतिविधि की व्याख्या करने में ब्रिटेन के अनुभववादियों द्वारा साहचर्यवाद का प्रयोग किये जाने के कारण ज्ञानार्जन के विभिन्न सिद्धांतों में साहचर्यवादी विचारों की केन्द्रीय भूमिका दिखाई पड़ने लगी। इन सिद्धान्तकारों में हर्मन एबिन्गहास, इवान पावलव तथा एडवर्ड ली थार्नडाइक आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

## 3.1 ब्रिटेन का अनुभववाद

अनुभववाद वह दर्शन है, जो ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में अनुभव पर बल देता है। अनुभव से अनुभववादियों का अभिप्राय केवल संवेदी अनुभव से है, आन्तरिक अनुभवों से नहीं जैसे – स्वप्न, तथा कल्पनाएँ अथवा वे मानसिक अनुभव जो समस्याओं समाधान करने तथा गणितीय गणनाओं के दौरान होते हैं। साथ ही अनुभववादी दावा करते हैं कि संवेदी अनुभव ज्ञान की मूलभूत तथ्यों को संगठित करता है। जब तक संवेदी प्रमाण एकत्रित नहीं कर लिए जाते तब तक वह ज्ञान ठहरता नहीं है (अस्तित्व में नहीं आता है), तथा बाद की सभी मानसिक प्रक्रियाएँ केवल संवेदी अनुभव पर ही केन्द्रित होनी चाहिए।

## 3.2 ब्रिटेन के अनुभववादियों का योगदान

आइए, अब ब्रिटेन के प्रमुख अनुभववादियों पर विचार करें:

### 3.2.1 थॉमस हॉब्स

थॉमस हॉब्स को ब्रिटेन के अनुभववाद का संस्थापक माना जाता है। उनका विश्वास था कि सभी ज्ञान संवेदी अनुभवों से ही प्राप्त हुए थे। जटिल विचार प्रक्रियाओं की व्याख्या करने के लिए हॉब्स साहचर्यवाद का ही उपयोग करते थे। उन्होंने सुसंगत तरीके से एक विचार के बाद दूसरे विचार की प्रवृत्ति को समझाने का प्रयास किया जिसे ट्रेन आफ थॉट कहा जाता है विचारों की इस प्रकृति को चिंतन की श्रृंखला कहा जाता है। इसके लिए, वे सर्वप्रथम अरस्तु द्वारा प्रस्तावित सामीप्यता के नियम का

उपयोग करते थे। सामीप्यता का नियम बताता है कि जब घटनाओं का अनुभव साथ-साथ किया जाता है तो उन्हें साथ-साथ ही स्मरण किया जाता है और बाद में साथ-साथ ही सोचा जाता है। ब्रिटेन के सभी अनुभववादी ने जो हॉब्स का अनुसरण करते थे, साहचर्य की धारणा के आधार पर ही मानसिक घटनाओं को एक विशिष्ट क्रम में करने अथवा याद करने के सिलसिले की व्याख्या की थी।

**बॉक्स 3.1 : थॉमस हॉब्स**

ब्रिटेन के अनुभववाद के संस्थापक थॉमस हॉब्स, विलियम ओखम, फ्रांसिस बेकन तथा गेलीलियो से प्रभावित थे। उनके कार्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे भौतिकतावादी थे क्योंकि वे यह मानते थे कि हर वस्तु जो दिखाई पड़ती है, वह भौतिक है। हर अस्तित्व में आने वाली वस्तु एक पदार्थ है। वे इंजीनियर थे, क्योंकि वे यह मानते थे कि संसार तथा हर चीज जो संसार में होती है, मनुष्य भी, मशीन की तरह काम करते हैं। वे नियतिवादी थे क्योंकि वे यह विश्वास करते थे कि मानव-व्यवहार सहित सभी गतिविधियाँ उन शक्तियों से संचालित हैं, जो उनके ऊपर काम करती हैं तथा वे एक अनुभवादी थे। उन्हें लगा कि ज्ञान संवेदी अनुभवी से लिया गया है भले ही सभी अनुभववादी जो हॉब्स का अनुसरण करते थे अवश्य उनकी तरह भौतिकवादी या यांत्रिकवादी नहीं थे। वे सभी सहज विचारों के पूर्ण इनकार में उनके साथ सहमत हुए। थॉमस हॉब्स ने लंबा, उपयोगी एवं प्रभावशाली जीवन जिया था।

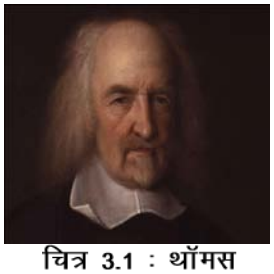

चित्र 3.1 : थॉमस हॉब्स(1598–1679
स्रोत :
www.theguardian.com

## 3.2.2 जॉन लॉक

जॉन लॉक की मनोविज्ञान पर पुस्तक *'एन एस्से कंसरनिंग ह्यूमन अंडरस्टेंडिंग'* (1680) में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक को ब्रिटिश अनुभववाद का औपचारिक आरंभ माना जाता है। लॉक का आरंभिक मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि मस्तिष्क ज्ञान कैसे अर्जित करता है। रेने देकार्ते की जन्मजात विचारों की धारणा को जॉन लॉक ने खारिज कर दिया था और यह प्रस्तावित किया था कि मनुष्य जब जन्म लेते हैं तब ज्ञान-शून्य होते हैं। अपने मत के समर्थन में लॉक ने अरस्तु की धारणा 'कोरी पट्टी' (Tabula Rasa) का उपयोग किया था जिसका अर्थ 'खाली स्लेट' होता है। अर्थात जन्म के समय मनुष्य खाली स्लेट की तरह होता है। लॉक ने आगे कहा - कुछ विचार बचपन में ही सीख लिए जाते हैं और लोग इससे अवगत नहीं होते, यही कारण है कि बड़े होने पर ऐसा लगता है कि वे विचार जन्मजात थे। इस प्रकार लॉक के अनुसार, मस्तिष्क अनुभव के माध्यम से सीखता है।

इसके आगे, लॉक ने इस बात पर अपना तर्कसम्मत मत प्रस्तुत किया कि विचारों की उत्पत्ति कैसे होती है। उन्होंने विचारों को दो श्रेणियों में विभाजित किया – सरल विचार संवेदना और परावर्तन से उत्पन्न होते हैं जिन्हें मस्तिष्क बिना किसी प्रतिरोध के ग्रहण करता है। सरल विचारों की प्रकृति तात्विक होती है अर्थात उन्हें और सरल रूपों में नहीं बदला जा सकता। इन सरल विचारों को मस्तिष्क सक्रिय रूप से संयुक्त कर लेता है जिससे नये विचारों का जन्म होता है जो जटिल होते हैं। इस प्रकार जटिल विचार, सरल विचारों के संयोजित रूप होते हैं जिन्हें सरल रूपों में बदला जा सकता है। विचारों के संयोजित होने की प्रवृत्ति साहचर्य के मानसिक प्रयत्न का आरंभ माना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, सरल विचार एक दूसरे के साथ संयोजित होकर संयुक्त विचार बनाते हैं। मस्तिष्क की सरल विचारों में परिवर्तित होने की यह प्रवृत्ति तथा सरल विचारों का संयोजन कर संयुक्त विचारों का निर्माण करना

मनोविज्ञान के विज्ञान का केन्द्रीय सिद्धांत बन गया। लॉक ने तर्क दिया कि विचार मशीनों की तरह तरह होते हैं। जिस तरह मशीनों को खोलकर उनके पुर्जे अलग-अलग करने के बाद उन्हें फिर से जोड़कर जटिल मशीनें तैयार की जा सकती हैं उसी तरह मनुष्यों के विचारों के साथ होता है। इस विचार के मस्तिष्क मशीन की तरह काम करता है इस आधार पर लॉक कहते हैं कि मस्तिष्क प्राकृत सृष्टि के अनुरूप कार्य करता है। सरल विचार मौलिक तत्वों की तरह होते हैं जिनके और छोटे-छोटे टुकड़े नहीं किये जा सकते परन्तु उन्हें संयुक्त किया जा सकता है। यह कहें कि उन्हें संयुक्त करके और अधिक जटिल संरचनाएँ तैयार की जा सकती हैं। इस प्रकार साहचर्यवाद का सिद्धांत इसलिए महत्वपूर्ण हो गया क्योंकि यह मस्तिष्क को शरीर की तरह ही एक मशीन मानक चलता है।

चित्र 3.2 : जॉन लॉक
(1632–1704)
स्रोत : www.history.com

**बॉक्स 3.2 : जॉन लॉक**

थॉमस हॉब्स ब्रिटेन के अनुभववाद के संस्थापक थे। परन्तु अधिकतर ब्रिटेन के व्यहारवाद को विचार देने का काम जॉन लॉक ने किया। यह स्पष्ट है कि बाद में आने वाले सभी अनुभववादियों ने लॉक के मन-मस्तिष्क में 'द्वैतवाद के विचार को अपनाया और हॉब्स के भौतिकवाद के विचार को खारिज कर दिया। लॉक का सबसे प्रसिद्ध काम उनके द्वारा तैयार किया गया शोध पत्र है जिसे 1690 में *'एन एस्से कंसरनिंग ह्यूमन अंडर स्टेंडिंग* शीर्षक से प्रकाशित किया गया। मनोविज्ञान के लिए भी यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। लॉक को इसे तैयार करने में पूरे 17 वर्ष लगे थे। जब लॉक 60 वर्ष के हो चुके थे, तब यह शोध प्रकाशित हुआ। लॉक ने शिक्षा, सरकार तथा अर्थशास्त्र पर भी व्यापक रूप से लिखा।

एक अमीर अनुभववादी से अधिक लॉक ने खुद की एक राजनीतिक दार्शनिक माना। लॉक जन्मजात नैतिक सिद्धांतों के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि सहज नैतिक सत्य के विचार से हठधर्मिता का विकास हुआ। लॉक ने राजाओं के दैवीय अधिकार की धारणा को भी चुनौती दी तथा लोगों द्वारा और उसके लिए एक सरकार का प्रस्ताव रखा।

### 3.2.3 जॉर्ज बर्कले

जॉर्ज बर्कले ने सांसारिक वस्तुओं के ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया की व्याख्या करने के लिए साहचर्य के सिद्धांत का उपयोग किया था। बर्कले ने बताया कि अपने चारों ओर की गतिविधियों व चीजों को समझने के लिए विभिन्न संवेदनों के साहचर्य से गुजरना पड़ता है। ज्ञानार्जन या समझना मौलिक रूप से एक प्रकार का निर्माण या संयोजन है, जिसमें सरल विचारों (मानसिक तत्वों) को साहचर्य के सीमेंट या गारे से जोड़ा जाता है। अपने शोधपत्र *'एन एस्से टुवार्डस ए न्यू थ्योरी ऑफ विजन* (*बर्कले*, 1709) में बर्कले ने स्पष्ट किया है कि जटिल विचारों का निर्माण उन सरल विचारों के संयोजन से होता है जो इंद्रियों द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, रेल के एक कोच की व्याख्या करते हुए बर्कले कहते है कि इसकी जटिलता इसके पहियों की

आवाज से, ध्वनि, ढांचे की मजबूती इसके चमड़े की सीटों की गंध से तथा बाक्स की आकृति देखने से पता लगती है।

बर्कले के अनुसार, मस्तिष्क सरल विचार रूपी आधारभूत मानसिक निर्माण शिलाखंडों को जोड़कर जटिल विचार रूपी इमारत खड़ी करता है दृश्य गहनता प्रत्यक्षण (Visual Depth Perception) की व्याख्या करने के लिए बर्कले ने साहचर्य के सिद्धांत का उपयोग किया था। गहराई के तीसरे आयाम का पता लगाने में जो समस्या उत्पन्न होती है, उसका बर्कले ने परीक्षण किया। जबकि मनुष्य की आँख का दृष्टिपटल केवल दो आयामों का पता देखकर लगा सकता है, बर्कले ने बताया कि गहराई के आयाम का पता मनुष्य अपने अनुभव से लगाता है। मनुष्य की आँखें अलग-अलग दूरियों पर स्थित वस्तुओं को देखने के लिए अपने आपको संयोजित करती हैं। दृश्य प्रभावों उन संवेदनों के साथ संयोजित हो जाते हैं जो वस्तुओं को निकट और पीछे खींच लाने के लिए बने होते हैं। इसका अर्थ यह है कि वस्तुओं की ओर पहुंचना या चलने के संवेदी अनुभवी के साथ-साथ आँखों की मांसपेशियाँ से संवेदनाएँ जुड़ जाती है जिसके परिणामस्वरूप गहराई का प्रत्यक्षण होता है। इसलिए गहराई का अनुमान लगाना सरल संवेदी अनुभव न होकर, उन विचारों में साहचर्य है जो सीखे जाते हैं।

**बॉक्स 3.3 : जॉर्ज बर्कले**

30 वर्ष की आयु से पहले ही जॉर्ज बर्कले प्रसिद्ध लेखक बन गये थे। उनकी *'एन एस्से टुवार्डस ए न्यू थ्यौरी ऑफ विजन* 1709 में प्रकाशित हुई थी, उस समय उनकी आयु मात्र 24 वर्ष थी। इसके एक वर्ष बाद 1710 में उनकी पुस्तक *'ए ट्रीटाइज कंसर्निंग द प्रिंसिपल्स ऑफ ह्यूमन नॉलेज* प्रकाशित हुई। इसके तीन वर्ष बाद उनकी महत्वपूर्ण पुस्तक *'थ्री डायलॉग्स बिटविन हिलस एण्ड फिलोनस* प्रकाशित हुई। इसमें अनुभूति और अभिप्रायः का अनुभव-जन्य विवरण मनोविज्ञान के इतिहास में मील का पत्थर बन गया। इसने साबित कर दिया कि जटिल प्रत्यक्षण को प्राथमिक संवेदनों के यौगिक के रूप में समझा जा सकता है।

बर्कले का देहांत वर्ष 1753 में हुआ। उसके सौ वर्ष पश्चात् कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय का नाम उनके नाम पर रखा गया।

चित्र 3.3 : जॉर्ज बर्कले (1685–1753)
स्रोत : www.britannica.com

बर्कले ने संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की व्याख्या साहचर्य और संवेदनों के रूप में करके साहचर्यवादी मान्यता को आगे बढ़ाया।

### 3.2.4 डेविड ह्यूम

डेविड ह्यूम ने मस्तिष्क के दो घटकों, प्रभावों और विचारों में अंतर स्थापित किया। प्रभाव मानसिक जीवन के आधारभूत तत्व हैं। वर्तमान में, संवदेनाओं को अनुभवों के समतुल्य मानने की धारणाएँ हैं। विचार वे मानसिक अनुभव हैं जो तब उत्पन्न होते हैं जब मन में कोई अभी-अभी उत्प्रेरक मन, उत्प्रेरणा पैदा करने वाली वस्तु पर केंद्रित नहीं होता। अब आकृति को विचारों के समतुल्य माना जाता है। प्रभाव विचारों से अपने स्रोत के आधार पर नहीं, अपितु सापेक्ष बल के आधार पर भिन्न होते हैं। प्रभाव सुदृढ़ व स्पष्ट होते हैं, इसके ठीक विपरीत विचार प्रभावों के कमजोर रूपांतरण होते हैं। ये दोनों मानसिक घटक सरल अथवा संयुक्त हो सकते हैं। एक सरल विचार अपने सरल प्रभाव से मेल खाता है। जटिल विचार सरल प्रभावों से अनिवार्य रूप से

मेल नहीं खाते। वैकल्पिक रूप से, जटिल विचार सरल विचारों से उत्पन्न होते हैं और मिलकर नये प्रतिमान बनते हैं। साहचर्य की प्रक्रिया से गुजरते हुए वे सरल विचारों के मिश्रण बन जाते हैं।

यह समझने के लिए कि विचार को कैसे संयोजित किया जाता है, ह्यूम ने सहचर्य के तीन नियम दिए *समतुल्यता* या *समानता, समय और स्थान में सामीप्यता, कारण एवं प्रभाव*। समानता का नियम बताता है कि अधिक समान विचार अधिक आसानी से संयुक्त हो जाते है। सामीप्यता का नियम (Law of contiguity) से विचार जिसने अधिक निकट होते हैं अथवा एक समय में जितने अधिक निकट आ कर अनुभव होते हैं, उतने ही शीघ्र ये विचार संयुक्त हो जाते हैं। कारण और प्रभाव का नियम बताता है कि एक ही क्रम में दो विचार, घटनाएँ या वस्तुएँ जितना अधिक बार सान्निध्य की अनुभूति प्राप्त करती हैं उतनी ही बार उनमें से एक दूसरे की उत्पत्ति का कारण बन जाता है, और उनका उतनी ही अधिक सशक्तता से साहचर्य होता है।

अपने साहचर्यवाद के नियमों की व्याख्या करते समय ह्यूम ने जो तर्क प्रस्तुत किए हैं, वे उसे पूर्ववर्ती अनुभववादियों की तरह यांत्रिक संरचना के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका विश्वास था कि उनके साहचर्य के नियम मस्तिष्क किस प्रकार सकार्य करते हैं इसे समझाने के लिए सार्वभौमिक सिद्धान्त हैं। वे यह मानते थे कि ये नियम भौतिक संसार के नियमों से मानसिक प्रतिरूप हैं, जो यह बताते हैं कि यह ग्रह (पृथ्वी) किस तरह काम करता है। इस प्रकार ह्यूम मौजूद साहचर्यवादियों की विद्यमान धारणा– सरल विचार जटिल विचारों की संरचना करने के लिए यांत्रिक ढंग से संयुक्त हो जाते हैं।

चित्र 3.4 : डेविड ह्यूम (1711–1776)
स्रोत : www.britannica.com

### बॉक्स 3.4 : डेविड ह्यूम

डेविड ह्यूम के अनुसार, सभी विज्ञान किसी न किसी रूप में मनुष्य की प्रकृति से संबंधित होते हैं। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि सभी महत्वपूर्ण मामले प्रकृति को प्रभावित करते हैं और इसीलिए मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। उन्होंने ओकाम, बेकन, हॉब्स, लॉक तथा बर्कले के अनुभववादी परम्परा का अनुसरण किया। न्यूटन के विज्ञान से भी वे अत्यधिक प्रभावित हुए थे और नैतिक दर्शन के लिए कुछ करना चाहते थे, जैसा कि न्यूटन ने प्राकृतिक दर्शन के लिए किया था।

ह्यूम ने मनोविज्ञान के महत्व को बहुत बढ़ाया। उन्होंने राजनीति, दर्शन, विज्ञान तथा मनोविज्ञान सबको एक साथ लाने का काम किया। ह्यूम के अनुसार, सभी प्रकार के ज्ञान अनुभव द्वारा प्राप्त किये जाते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि विश्वासों को तर्क द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता न ही तर्कों के आधार पर उनका बचाव किया जा सकता है। वे अनुभव से प्राप्त होते हैं और यह बात भी निश्चित रूप से नहीं कही जा सकती है कि जो कुछ अतीत में सीखा गया है वो भविष्य में भी अवश्य लागू किया जा सकता है। इस कारण ह्यूम ने यह सुझाव दिया कि कुछ भी निश्चित नहीं है, अपनी सोच के कारण ह्यूम को महान संशयवादी माना जाता है।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1**

1) जॉन लॉक के अनुसार मस्तिष्क किस तरह ज्ञान प्राप्त करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विचारों के संयुक्तीकरण की व्याख्या ह्यूम किस प्रकार करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) दृश्य गहनता प्रत्यक्षण पर बर्कले का दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

### 3.2.5 डेविड हर्टले

डेविड हर्टले ने सामीप्यता तथा पुनरावृत्ति को साहचर्य के दो मौलिक नियम के रूप में प्रस्तावित किया था। इन नियमों के माध्यम से हर्टले ने स्मृति, विचार, संवेग और ऐच्छिक तथा अनैच्छिक क्रिया पद्धतियों की व्याख्या की। ऐसा करके उन्होंने ब्रिटेन के अनुभववाद को बढ़ावा दिया। हर्टले के अनुसार, सामीप्यता का अर्थ है विचारों तथा संवेदनों का संयुक्तीकरण। वे साथ-साथ घटित होते हैं अथवा एक के बाद एक इस प्रकार कि एक का घटित होना, दूसरे के घटित होने से जुड़ा हो। हर्टले इस बात पर भी जोर देता है कि संवेदनाओं और विचारों की पुनरावृत्ति साहचर्य के विकास के लिए आवश्यक है।

जॉन लॉक की तरह हर्टले ने भी इस बात पर जोर दिया था कि ज्ञान जन्मजात नहीं होता और जन्मजात साहचर्य भी नहीं होते। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभवों से ज्ञान की उत्पत्ति होती है। जैसे-जैसे विभिन्न संवेदी अनुभव एकत्रित या संचित होते जाते हैं, ज्यों-ज्यों बच्चा बढ़ता होता है जटिल मानसिक संयोजन स्थापित होते चले जाते हैं। जब व्यक्ति वयस्क अवस्था में पहुंचता है, तब तक विचारों की उच्च प्रणालियां विकसित हो जाती हैं। इन उच्च प्रणालियों में निर्णय करने की क्षमता तथा सोचने की क्षमता शामिल हैं जो सरल संवेदनों अथवा मानसिक तत्वों के यौगिक होते हैं। इसका अर्थ यह है कि अपने पूर्ववर्ती अनुभववादियों की तरह हर्टले ने भी यह प्रस्तावित किया था कि सरल विचार उच्चतर मानसिक क्रिया-पद्धतियाँ ही हैं। हर्टले ही पहले व्यक्ति

थे, जिन्होंने साहचर्य के सिद्धान्त को सभी प्रकार की मानसिक गतिविधियों की व्याख्या करने के लिए लागू किया।

चित्र 3.5 : डेविड हर्टले (1705–1757)
स्रोत :
www.wikiquote.org

**बॉक्स 3.5 : डेविड हर्टले**

डेविड हर्टले का सबसे महत्वपूर्ण शोध गन्थ 1749 में '*मैन, हिज फ्रेम, हिज ड्यूटी एण्ड हिज एक्सप्लेनेशन्स* प्रकाशित हुआ था। इस शोध को पूरा करने में उन्हें अनेक वर्ष लगे। इस ग्रन्थ के दो भाग हैं, पहला भाग पूरी तरह मनोविज्ञान के विषय में है।

हर्टले ने न्यूरोदैहिक अनुमान का उपयोग किया था, उनके समय में साहचर्य के विश्लेषण में किये गये विचार और व्यवहार की व्याख्या के लिए न्यूरोदैहिक का उपयोग करने वाले रैने डेकार्ट के बाद डेविड हर्टले पहले व्यक्ति बने। हर्टले ने केवल न्यूरोदैहिक प्रणाली का सहारा लिया था जो समय बीतने के साथ-साथ आगे चलकर गलत साबित हुई क्योंकि तब तक अधिक सटीक जानकारी विकसित हो गई थी। परन्तु डेविड हर्टले के कार्य ने मनोविज्ञान के क्षेत्र से जीव विज्ञान के संबंधों की खोज करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

### 3.2.6 जेम्स मिल

अन्य अनुभववादियों की तरह जेम्स मिल भी मनुष्य के मस्तिष्क को मशीन की तरह ही मानते थे, परन्तु वे अपनी बात को अधिक स्पष्टता और समावेशीय ढंग से कहते थे। उनका उद्देश्य मजबूती के साथ इस विचार को स्थापित करना था कि मस्तिष्क केवल एक मशीन है। वे व्यक्तिपरकता मन सम्बंधी गतिविधियों वाली धारणाओं का दृढ़ता से खंडन करते थे। मानसिक क्रियाओं की भांति मानते थे। मस्तिष्क को मशीन की तरह मानने के पीछे उनका तात्पर्य इस बात पर जोर देना था कि मस्तिष्क प्रकृति से निष्क्रिय है, वह केवल बाह्य उद्दीपन से सक्रिय होता है। मनुष्य इन उद्दीपनों के प्रति स्वचालित ढंग से सक्रिय होते हैं। बिना उद्दीपनों के सहज सक्रियता में मनुष्य असमर्थ हैं।

अपने महत्वपूर्ण शोध '*एनेलासिस ऑफ द फिनॉमिना ऑफ द ह्यूमन माइंड* (Analysis of the Pheaonmeaon of the Human Mind, 1829) में मिल ने मस्तिष्क का अध्ययन करने की प्रविधि का विश्लेषण किया है। इस प्रविधि के अनुसार, मस्तिष्क को समझने के लिए 'मस्तिष्क को उसके मौलिक घटकों में तोड़कर करना होगा। यह पद्धति इसलिए प्रस्तावित की गई हैं क्योंकि मस्तिष्क जैसी जटिल चीज को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उसे उसके छोटे से छोटे घटकों में विभक्त किया जाय। मस्तिष्क के इन घटकों या तत्वों को मिल, संवेदन तथा विचार की संज्ञा देता है। अन्य अनुभववादियों के अनुसार, मिल भी मानता है कि ज्ञान संवेदनाओं के साथ शुरू होता है, और तब साचहर्य की प्रक्रिया से अधिक जटिल विचार प्राप्त होते हैं। मिल के अनुसार, सान्निध्य अथवा एक साथ घटित होने से साहचर्य की स्थिति उत्पन्न होती है, सान्निध्य एक साथ घटित होने की स्थिति में हो या एक के तुरन्त बाद एक के घटित होने के क्रम में।

**बॉक्स 3.6 : जेम्स मिल**

मनोविज्ञान के क्षेत्र में जेम्स मिल का महत्वपूर्ण योगदान उनका 1829 में प्रकाशित शोधकार्य – '*एनालाइसिस ऑफ द फिनोमिना ऑफ द ह्यूमेन माइंड*' है इसमें साहचर्यवाद की समग्र व्याख्या की गई है।

मिल के मस्तिष्क के बारे में विचार, न्यूटनवादी भौतिक विज्ञान पर आधारित थे। न्यूटन के अनुसार, संसार अथवा ब्रह्मांड ऐसे तत्वों से बना है जो परस्पर एक दूसरे से जुड़े हैं, जो पूर्वानुमानित ढंग से कार्य करते हैं। मिल के अनुसार, मस्तिष्क के घटक साहचर्यवाद के नियमों के अनुसार एक-दूसरे से जुड़े हैं इस प्रकार मस्तिष्क संबंधी अनुभव भौतिक घटनाओं की तरह ही पूर्वानुमानित हैं।

मिल आगे कहता है कि साहचर्य निष्क्रिय तथा स्वचालित होता है और मस्तिष्क कोई सृजनात्मक कार्य नहीं करता। इसका अर्थ यह है कि साहचर्य एक यांत्रिक प्रक्रिया है और उससे उत्पन्न होने वाले विचार छोटे-छोटे तत्वों के संयुक्त रूप हैं।

चित्र 3.6 : जेम्स मिल (1773–1836)
स्रोत : www.britannica.com

## 3.3.7 जॉन स्टुआर्ट मिल

जेम्स मिल के पुत्र जॉन स्टुआर्ट मिल अपने पूर्ववर्ती अनुभववादियों के साहचर्य संबंधी विचारों से सहमत नहीं थे। वे अपने पिता सहित अपने सभी पूर्ववर्ती अनुभववादियों के यांत्रिक स्थिति के विचार से असहमत थे। उन्होंने दावा किया कि मस्तिष्क निष्क्रिय नहीं है, विचारों के साहचर्य में मस्तिष्क सक्रिय की भूमिका रहती है। जॉन स्टुआर्ट मिल के अनुसार, जटिल विचार सरल विचारों के संकलन मात्र नहीं हैं, जैसा कि पूर्ववर्ती अनुभववादियों का विचार था।

जॉन स्टुआर्ट मिल मानता है कि जब सरल विचार एक साथ मिलते हैं तो वे मिलकर जटिल विचारों का निर्माण नहीं करते बल्कि वे नये गुणों को धारण कर लेते हैं, जो सरल विचारों के गुणों से भिन्न होते हैं। जिस प्रकार दो रंगों को मिला देने पर एक नया रंग बन जाता है, उसी तरह जब सरल विचार आपस में मिलते हैं तो वे मिलकर कुछ ऐसी विचार बनाते हैं जो पूरी तरह नया होता है जिन्हें जटिल विचार कहा जाता है। सरल विचारों से मिलने से नये गुणों की रचना होने की क्रिया को *सर्जनात्मक संश्लेषण* कहा जाता है। सर्जनात्मक संश्लेषण का अर्थ है कि मानसिक तत्व संयुक्त होकर एक ऐसी विशिष्ट चीज की उत्पत्ति करते हैं, जिसके गुण संयुक्त होने वाले घटकों (मानसिक तत्वों) में नहीं होते।

सर्जनात्मक संश्लेषण की धारणा स्टुआर्ट मिल में रसायन विज्ञान के अनुसंधान के प्रभाव से आई थी। इसने स्टुआर्ट मिल को एक ऐसा प्रतिमान प्रदान किया जो अन्य अनुभववादियों से भिन्न था, क्योंकि वे भौतिक विज्ञान तथा यांत्रिकी (मशीन विज्ञान) के अनुसंधान से प्रभावित थे। उनके कार्यकाल के दौरान रसायनविद रासायनिक संश्लेषण के सिद्धांत का प्रदर्शन कर रहे थे जिसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले रासायनिक यौगिक के गुण उन छोटे घटकों में मौजूद नहीं थे, जिनसे मिलकर नया रासायनिक यौगिक निर्मित हुआ है। जॉन स्टुआर्ट मिल रासायनिक विश्लेषण की धारणा को साहचर्य की व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल किया। उन्होंने समझाया कि सरल विचार मिलकर केवल जटिल विचारों का निर्माण नहीं करते, बल्कि वे पूर्णतः नये रूप में विकसित या परिवर्तित हो जाते हैं। जॉन स्टुआर्ट मिल की साहचर्य की अवधारणा 'मनोरसायन' के नाम से जानी गई।

चित्र 3.7 : जॉन स्टुआर्ट मिल (1806–1873)
स्रोत :
www.theguardian.com

**बॉक्स 3.7 : जॉन स्टुआर्ट मिल**

जॉन स्टुआर्ट मिल का सबसे प्रसिद्ध शोध कार्य – *'ए सिस्टम ऑफ लॉजिक, रेश्योसिनेटिव एण्ड इन्डक्टिव : बीइंग ए कनैक्टिड व्यू ऑफ द प्रिसिंपल्स ऑफ एविडेंस एण्ड द मेथड्स ऑफ साइंटिफिक इंवॅस्टीगेशन* (1843) है। यह शोध पुस्तक थोड़े समय में ही बहुत प्रसिद्ध हो गई और इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए। हर वैज्ञानिक ने 19वीं शताब्दी उत्तरार्ध में इस किताब को पढ़ा।

जेम्स स्टुआर्ट मिल ने मनोविज्ञान को वैज्ञानिक विचारधारा के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने लगातार इस बात पर जोर दिया कि मानव-स्वभाव का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति का इस्तेमाल किया जा सकता है। उसका विश्वास था कि मनुष्य के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों का अध्ययन पूरी वैधानिकता के साथ इस प्रकार किया जा सकता है कि किसी भी संबंधित वैज्ञानिक प्रश्न का उत्तर दिया जा सके।

जेम्स मिल सामाजिक सुधारवादी भी थे। उन्होंने बोलने की आजादी, प्रतिनिधिक सरकार तथा महिलाओं के उत्थान के लिए व्यापक रूप से कार्य किया।

### 3.2.8 एलेक्ज़ेंडर बेन

एलेक्ज़ेंडर बेन ने जॉन स्टुआर्ट मिल के इस विचार का समर्थन किया कि मस्तिष्क सक्रिय होता है और इस प्रकार वे मनोरसायन के रूप को आगे बढ़ाया। बेन के अनुसार, मस्तिष्क के तीन घटक होते हैं ये हैं – भावानुभूति, इच्छाशक्ति, तथा प्रज्ञा।

बेन ने साहचर्य के कुछ नियम प्रस्तावित किए। पूर्ववर्ती ब्रिटेन के अनुभववादियों की तरह बेन ने सामीप्यता के नियम को साहचर्य का मौलिक सिद्धान्त बताया। बेन ने दावा किया कि क्रियाएँ, संवेदनाएँ तथा भावनाएँ तब संयुक्त हो जाती है जब वे एक साथ घटित होती हैं। सामीप्यता के नियम के साथ-साथ पुनरावृत्ति का नियम भी लागू होता है, पूर्ववर्ती, ब्रिटेन के अनुभववादियों की तरह बेन भी मानते थे।

एक बात जो बेन को अनुभववादियों से अलग रखती है वह है, बेन का यह मानना कि सान्निध्य के नियम तथा पुनरावृत्ति के नियम स्नायु तंत्र संबंधी परिवर्तनों के कारण लागू होते हैं। साम्य के नियम के अनुसार, किसी घटना का अनुभव उससे समानता रखने वाली अन्य घटनाओं की स्मृतियों को प्रकट कर देता है जो विभिन्न काल खंडों व परिस्थितियों में अनुभव की गई थी।

पहले से ही मौजूद साहचर्य के इन नियमों में बेन ने अपने दो नियम और जोड़ दिये, ये हैं – 'संयुक्त साहचर्य का नियम' (The law of compound association) तथा 'संरचनात्मक साहचर्य का नियम' (The law of constructive association)। संयुक्त साहचर्य के नियम के अनुसार, साहचर्य की प्रक्रिया में एक साथ अनेक विचार एक के बाद एक के क्रम में नहीं जुड़ते अपितु सान्निध्य अथवा साम्य के माध्यम से जुड़ते हैं। यह प्रक्रिया संयुक्त साहचर्य कहलाती है।

संरचनात्मक साहचर्य का नियम लागू करके बेन ने 'साहचर्यवाद' में एक सक्रिय तत्व जोड़ दिया। संरचनात्मक साहचर्य का नियम बताता है कि अनुभव की प्रक्रिया के दौरान जो संयोजन मौजूद होते हैं उनसे बिल्कुल अलग गुणों वाले संयोजन उत्पन्न करने की क्षमता मस्तिष्क में है। बेन के अनुसार, मस्तिष्क विभिन्न अनुभवों की स्मृतियों को संशोधित एवं पुनर्गठित करके असंख्य प्रकार के नये संयोजन तैयार करता है।

### बॉक्स 3.8 : एलेक्ज़ेंडर बेन

एलेक्ज़ेंडर बेन को प्रायः प्रथम वास्तविक मनोवैज्ञानिक माना जाता है। उनकी दो किताबें '*द सेंसेस एण्ड द इंटेलैक्ट*' (1855) तथा '*इमोशन्स एंड द विल*' (1859)। मनोविज्ञान की प्रथम व्यवस्थित पुस्तकें मानी जाती हैं और पचास वर्षों तक मनोविज्ञान की स्तरीय पुस्तकों के रूप में वे स्थापित रही हैं।

इन दो पुस्तकों के अलावा 1873 में बेन ने एक किताब और लिखी जिसका नाम था– '*माइंड एन्ड बॉडी*'। मस्तिष्क तथा शरीर की समग्र व्याख्या करने वाली पुस्तक के रूप में मनोविज्ञान जगत में इसे शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ। 1876 में बेन ने '*माइंड*' शीर्षक से एक शोध पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। मनोवैज्ञानिक प्रश्नों के उत्तर देने वाला यह पहला स्तरीय शोध पत्र था। दार्शनिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में इस शोध पत्र की आज भी प्रतिष्ठा है।

बेन, डेविड हार्टले की तरह, शारीरिक प्रक्रियाओं और व्यवहार के बीच सहसंबंधों को खोजने में रुचि रखते थे। हार्टले ने मात्र काल्पनिक शारीरिक निर्माणों का उपयोग किया था, जबकि बेन वास्तविक प्रक्रियाओं की खोज कर रहा था। इस प्रकार, बेन मनोवैज्ञानिक घटना के साथ वास्तविक शारीरिक प्रक्रियाओं से संबंधित पहला व्यक्ति था। यह मनोविज्ञान के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बेन के बाद, शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान के बीच संबंधों की जाँच करना एक अभिन्न पहलू बन गया।

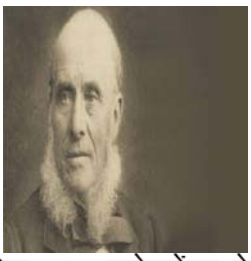

**चित्र 3.8 : एलेक्ज़ेंडर बेन (1818–1903)**
**स्रोत :**
www.historyradio.org

### अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) रसायन विज्ञान के अनुसंधान का जॉन स्टुआर्ट मिल पर क्या प्रभाव पड़ा?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) एलेक्ज़ेंडर बेन अपने पूर्ववर्ती अनुभववादियों से किस प्रकार अलग है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

## 3.3 समकालीन मनोविज्ञान में अनुभववाद

अनुभववाद के विकास के साथ-साथ ज्ञानार्जन की प्रक्रिया पर अनेक विचारकों के विचार बदल गये हैं। ब्रिटेन का साहचर्यवाद/अनुभववाद नव विकसित हो रही मनोविज्ञान की प्रायोगिक विज्ञान के लिए अत्यधिक महत्व की विरासत को छोड़ दिया। इस महत्व का एक बड़ा हिस्सा पद्धति मूलक दृष्टिकोण में दिखाई पड़ता है, जिसका विकास एवं संशोधन साहचर्यवाद ने किया। संवेदन तथा प्रतिक्रिया आधारित विचारों व प्रयोगों का चलन समाप्त हो गया। नये विज्ञान सम्मत मनोविज्ञान को आकार देने में अनुभववाद जो महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था वह अब स्पष्ट होने लगी – अनुभववादी संदर्भों ने मनोविज्ञान को मूल विषय-वस्तु का निर्माण किया। 19वीं शताब्दी के मध्य तक दार्शनिक मानव प्रकृति पर आधारित प्राकृतिक विज्ञान के लिये सैद्धान्तिक तर्कों की स्थापना कर चुके थे।

## 3.4 साहचर्यवाद और अधिगम सिद्धान्तवादी

साहचर्यवादी अवधारणा ने ऐतिहासिक दृष्टि से ज्ञानार्जन के सिद्धांतों के प्रतिनिधि की भूमिका निभाई है। साहचर्यवाद के इस मनोवैज्ञानिक पक्ष को आगे ले जाने में ज्ञानार्जन प्रक्रिया के तीन सिद्धान्तकारों ने उल्लेखनीय कार्य किया – ये हैं – हर्मन एबिन्गहास, इवान पावलव तथा एडविन थॉर्नडाइक।

### 3.4.1 हर्मन एबिन्गहास

हर्मन एबिन्गहास ने साहचर्यवाद के में उल्लेखनीय परिवर्तन किये। जब एबिन्गहास ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में काम करना आरंभ किया था, उससे पहले निरर्थक पद को समझने के लिए उन साहचर्यों का परीक्षण करना होता था जो पहले से ही हो चुके होते थे। ब्रिटेन के अनुभववादी इस पद्धति का अनुसरण करते रहे। ऐसा करके अनुसंधानकर्ता उल्टी दिशा में काम कर रहे थे क्योंकि वे केवल यह अध्ययन कर पा रहे थे कि संयोजन किस प्रकार स्थापित होते हैं।

एबिन्गहास ने दूसरे सिरे से अपने कार्य का आरंभ किया। साहचर्यों की निर्मित अथवा प्रारुप का अध्ययन करने के बाद एबिन्गहास के लिए अब यह संभव था कि उन स्थितियों पर नियंत्रण कैसे किया जाएं जिनके कारण यह साहचर्य स्थापित हुए थे तथा ज्ञानार्जन के अध्ययन को वैज्ञानिक आधार कैसे प्रदान किया जाएं। इस प्रकार एबिन्गहास की कार्य प्रणाली अलग थी। उन्होंने साहचर्य के आरंभिक बनावट का अध्ययन करना आरंभ किया। इस प्रकार वह उन परिस्थितियों को नियंत्रित कर पाया जिनमें विचारों की श्रृंखलाएँ निर्मित हुई थीं और ऐसा करके उन्होंने ज्ञानार्जन प्रक्रिया के अध्ययन को अधिक वस्तुनिष्ठ बना दिया। ज्ञान के आधारभूत परिमाण के लिए एबिन्गहास ने संरचनावादियों की शैली अपनाई जिन्होंने साहचर्यों की पुनरावृत्ति को फिर से प्रत्यावर्तन की शर्त माना। एबिन्गहास ने तर्क दिया कि ज्ञानार्जन सामग्री से सम्बंधित कठिनाई का परिमापन पुनरावृत्ति द्वारा किया जा सकता है। पुनरावृत्तियों की गणना करके यह पता लगाया जा सकता है कि कितनी पुनरावृत्तियों के परिणामस्वरूप नयी सामग्री का निर्माण हुआ।

ज्ञानार्जन की प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिए एबिन्गहास ने एक पद्धति खोज निकाली जिसे आज निरर्थक पद कहा जाता है। उन्होंने *'निरर्थक पद'* पर शोध किया

(वह सामग्री जिसे सीखा जाता है)। '*निरर्थक पद*' के प्रयोग से ज्ञानार्जन की प्रक्रिया आ गई। टिचनर के अनुसार, जो संरचनावाद के संस्थापक, और वुण्ट के शिष्य थे, 'निरर्थक पद' की अवधारणा के अनुसंधान में, अरस्तु के बाद मनोविज्ञान की दुनिया में सबसे बड़ा कदम था।

एबिन्गहास को कुछ सामान्य विकल्पों की तलाश थी जो उसके विषय वस्तु को अभिव्यक्ति दे सकें। उसे लगा कि कहानी या कविता को उत्प्रेरण के लिए उपयोग करने में एक अंतर्निहित बाधा है क्योंकि ऐसा सामग्री के आशय अथवा साचहर्य को समझने के लिए उस भाषा विशेष के साथ अंतरंग होना आवश्यक हो जायेगा (अर्थात केवल वे लोग ही समझ पायेंगे जो उत्प्रेरण-सामग्री का माध्यम बनी भाषा से परिचित हैं)।

ये पूर्वघटित साहचर्य ज्ञानार्जन को सरल बनाते हैं। ऐसी सामग्री में साहचर्य पहले ही स्थागित हो चुके है, इसीलिए प्रयोगकर्त्ता इन पर नियंत्रण नही ंकर सकता। एबिन्गहास ऐसी सामग्री इस्तेमाल करना चाहते था जो समान रूप से असम्बद्ध हो, पूरी तरह समरूप हो, और उतनी ही अनजानी हो – अर्थात ऐसी सामग्री जिसके साहचर्य लगभग नगण्य रहे हो। इसके लिए उन्होंने 'निरर्थक पद' का निर्माण किया जिसमें दो व्यंजनों के बीच एक स्वर रखा गया (उदाहरणातः *lef*, *bok* अथवा *Yat*)।

व्यंजनों व स्वरों के अभी संभव संयोजनों को कार्ड पर लिखा। ऐसे 2,300 अक्षर युग्म तैयार हुए जिनसे उन्होंने यूं ही सीखी जाने वाली (ज्ञानार्जन के लिए उपयुक्त) उत्प्रेरण सामग्री तैयार की।

### बॉक्स 3.9 : हर्मन एबिन्गहास

हर्मन एबिन्गहास वह मनोविज्ञानी थे, जिन्होंने वुण्ट को गलत साबित किया था। वुण्ट के इस दावे के कुछ वर्ष बाद कि उच्च मानसिक प्रक्रियाओं पर प्रयोग नहीं किया जा सकता। अकेले एबिन्गहास के शोध कार्य ने, मनोविज्ञान के अकादमिक केन्द्र से हटकर, उच्च मानसिक क्रियाओं पर सफलतापूर्वक प्रयोग करना आरंभ कर दिया। एबिन्गहास पहले मनोविज्ञानी थे, जिन्होंने ज्ञानार्जन तथा स्मृति का प्रयोग द्वारा पता लगाया। ऐसा करते समय उन्होंने न केवल यह पाया कि वुण्ट के विचार गलत थे, बल्कि साहचर्यों के अध्ययन की दिशा ही बदल दी। एबिन्गहास ने मनोविज्ञान में सैद्धांतिक योगदान नहीं दिया, कोई औपचारिक प्रणाली नहीं बनाई, किसी विचारधारा की निष्पत्ति नहीं की। इन सब में उन्होंने कोई रुचि तक नहीं दिखाई। इसके बावजूद उन्होंने ज्ञानार्जन प्रक्रिया तथा स्मृति के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि समग्र प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी प्रसिद्धि प्राप्त की।

एबिन्गहास के कारण ज्ञानार्जन की प्रक्रिया का अध्ययन वस्तुनिष्ठा प्रमाणपरकता तथा प्रयोगात्मकता का क्षेत्र बना। 20वीं शताब्दी में यह मनोविज्ञान का केंद्रीय विषय बन गया। यह एबिन्गहास की दृष्टि थी जिसने मनोविज्ञान में परिकल्पना से लेकर औपचारिक वैज्ञानिक अनुसंधान तक को नई दिशा दी। ज्ञानार्जन प्रक्रिया तथा स्मृति के क्षेत्र में एबिन्गहास के अनेक निष्कर्ष आज भी अपने अस्तित्व आने के सौ वर्ष बाद आज भी प्रासंगिक हैं।

ऐसा माना जाता है कि एक वैज्ञानिक को इस अर्थ में एबिन्गहास को अत्यधिक सफल तथा विलिहम वुण्ट से भी अधिक प्रभावशाली माना जाता है।

चित्र 3.9 : हर्मन एबिन्गहास (1850–1909)
स्रोत : www.britannica.com

### 3.4.2 इवान पावलव

रूस के महान मनोविज्ञानी, इवान पावलव ने विचारों की अवधारणा को त्यागकर उद्दीपन-प्रतिक्रिया (Stumulus-Respnse) के सम्बंधों के आधार पर साहचर्य का अध्ययन करने की दिशा में सबसे पहले कदम उठाया। 'अनुबंधित प्रतिक्रिया पर उनके अनुसंधान – कार्य ने मनोविज्ञान को वस्तुपरक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ज्ञानार्जन-प्रक्रिया पर पावलव के काम ने साहचर्यवाद को पारंपरिक व्यक्तिपरक धारणा से हटाकर वस्तुपरक तथा मात्रात्मक मनोवैज्ञानिक घटनाओं जैसे ग्रंथियों के स्राव तथा मांसपेशीय गतियों की ओर मोड़ा।

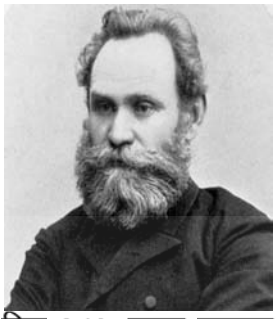

चित्र 3.10: इवान पावलव (1849–1936)
स्रोत : www.biography.com

**बॉक्स 3.10 : इवान पेट्रोविच पावलव**

इवान पावलव के अनुसंधान ने मनोविज्ञान को इस तरह प्रभावित किया कि वह वस्तुपरकता की ओर अग्रसर होने लगी। वह यंत्रवाद तथा परमाणुवाद की परम्परा का पालन करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहे वे विचार जिन्होंने नये मनोविज्ञान को आकार दिया था, तब से जब मनोवैज्ञानिक वुण्ट ने इसकी स्थापना की थी। इस परंपरा प्रयोगशाला में रखे गये कुत्ते हों अथवा मनुष्य हों – सब मशीनें हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि मनुष्य अधिक जटिल मशीन है परन्तु वह यह भी मानते थे कि वे अन्य मशीनों की तरह ही आज्ञाकारी तथा विनम्र हैं।

मनोविज्ञान को अधिक वस्तुपकर बनाने के अतिरिक्त पावलव ने मनोविज्ञान को अधिक क्रियाशील तथा व्यावहारिक बनाने की परम्परा डाली। पावलव का अनुबंधन का सिद्धान्त व्यवहार चिकित्सा के क्षेत्र में भी लागू किया जा सकता है। जोसेफ वोल्पे ने पावलव के अनुकूलन के सिद्धान्त पर आधारित व्यवहार चिकित्सा का विकास किया था। इससे पावलव के अनुसंधान कार्य की महत्ता एवं उपयोगिता का पता लगता है।

पावलव के अनुसंधान का क्षेत्र जिसका मनोविज्ञान के इतिहास में प्रमुख स्थान है, वह है *अनुबंधित* प्रतिर्व' का अध्ययन। अनुबंधित प्रतिक्रियाओं की धारणा एक अचानक हुई खोज थी। कुत्तों की पाचन ग्रंथियों को निकालने की अनुमति माँगी थी ताकि उनका निरीक्षण, मापन तथा अभिलेखन (लिखित विवरण) तैयार किया जा सके। पावलव कुत्तों के मुँह से निकलने वाली उस लार का परीक्षण करना चाहते थे जो उनके मुँह में खाद्य सामग्री रखने पर स्रवित होती थी। पावलव ने देखा कि कभी-कभी भोजन दिये जाने से पहले ही उनके मुँह से लार टपकने लगती थी, भोजन खिलाने के लिए नियमित आने वाले व्यक्ति के पैरों की आहट सुनते ही लार टपकते लगती थी। लार के अध्ययन का सम्बंध विशेष परिस्थितियों में, भोजन प्राप्त करने की सम्बधित क्रिया से पूर्व होने वाली उत्प्रेरणा से जुड़ गया। आरंभ में पावलव ने ऐसी प्रतिक्रियाओं का उल्लेख मानसिक प्रतिक्रियाओं के रूप में किया। ये मानसिक क्रियाएं प्रयोगशाला में गये कुत्तों में उत्प्रेरण द्वारा उत्पन्न कराई गई, उन्हें खाने के लिए भोजन देकर नहीं। पावलव ने दावा किया कि यह प्रतिक्रिया उस प्रतिक्रिया से उत्प्रेरणा पर होती थी जो भोजन लाने वाले व्यक्ति के पैरों की आहट सुनकर कुत्तों में हो जाया करती थी। यह एक मानसवादी व्याख्या थी। पावलव ने बाद में और अधिक वस्तुनिष्ठ तथा विवरणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की।

कुत्तों के साथ पावलव की पहले प्रयोग सरल थे। उन्होंने रोटी का एक टुकड़ा हाथ में उठाया और उसे कुत्तों को दिखाया, परन्तु खाने को दिया नहीं। रोटी को देखते ही कुत्तों के मुँह से लार टपकने लगी। कुत्तों के मुँह में लार स्रावित होने की यह

प्रतिक्रिया उनके मुँह में भोजन रखते ही आरंभ होने वाली पाचन प्रणाली में होने वाली प्रतिक्रिया से जुड़ी थी। इसके लिए घटित होने के लिए ज्ञार्नाजन की क्रिया आवश्यक नहीं थी। पावलव ने इसे *जन्मजात* अथवा *'अननुबंधित प्रतिवर्त'* नाम दिया।

भोजन देखते ही लार का स्राव होना, यद्यपि, पूर्वानुमानित मात्र नहीं है, इसे अर्जित ज्ञान के आधार पर घटित होना चाहिए। अब पावलव ने इस प्रतिक्रिया का उल्लेख *'अनुबंधित प्रतिक्रिया'* के रूप में उल्लेख किया। जबकि पहले उन्होंने इसे मानसवादी शब्दावली में 'मानसिक प्रतिवर्त' नाम दिया था। अब पावलव ने उसे इस आधार पर 'अनुबंधित प्रतिक्रिया' नाम दिया क्योंकि, यह भोजन को देखने और उसके बाद खाने के बीच उत्पन्न होने वाले साहचर्य या संबंध के कारण उत्पन्न होती थी।

इस मौलिक प्रतिमान के आधार पर पावलव ने अनेक सिद्धान्त बनाए:

1) अनुकूलन पद्धतियों साहचर्यों के अधिग्रहण व विस्मरण के क्रम को अपनाते हुए उनके परिमाणन एवं वस्तुकरण का प्रतिनिधित्व करती हैं। पावलव ने साहचर्यों के सिद्धान्त को स्वीकृत अवधारणाओं का प्रयोग द्वारा परीक्षण किया, डेविड ह्यूम, जेम्स मिल तथा जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे दार्शनिकों के विचारों के आधार पर विचार विमर्श किया। इससे उन्होंने जो निष्कर्ष निकाला उसके आधार पर शारीरिक संवेदना की भौतिकता के आधार पर साहचर्य की निर्मित की समग्र व्याख्या की।

   पावलव के अनुबंधन सिद्धान्त में आत्मनिष्ठ संप्रत्ययों की आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावा तंत्रिका प्रणाली, विशेषता 'कोर्टेक्स', प्रतिवर्तवाद के प्रकम को प्रदान करता हैं

2) अनुकूलन के अत्यधिक नियंत्रित प्रायोगिक प्रतिमान सभी उच्चतर स्नायु-गतिविधियों की विवेचना की संभावना प्रदान करते हैं। पावलव ने इस बात पर जोर दिया कि पर्यावरणीय उत्प्रेरकों पर सावधानी पूर्वक नियंत्रण रखते हुए ऐसे प्रभाव से उत्पन्न किये जाएं जो सभी प्रकार के व्यवहारों की विवेचना के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त (स्वीकार्य) हों।

3) पावलव को दृढ़ विश्वास था कि भौतिक संबंध अथवा सान्निध्य साहचर्यों के अधिग्रहण के मूलभूत सिद्धान्त हैं।

### 3.4.3 एडवर्ड ली थार्नडाइक

एडवर्ड थार्नडाइक ने मनोविज्ञान के साहचर्यवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। साहचर्यवाद के बारे में एडवर्ड थॉर्नडाइक की प्रणाली सबसे उपयुक्त मानी जाती है। थार्नडारक जीव मनोविज्ञान के विकास के मामले में सबसे अधिक महत्वपूर्ण शोधकर्ता माने जाते हैं। थॉर्नडारक ने प्रत्यक्ष व्यवहार पर आधारित यांत्रिक, वस्तुनिष्ठ ज्ञानार्जन सिद्धान्त का विकास किया था। थॉर्नडाइक के अनुसार, मनोविज्ञान को व्यवहार का अध्ययन करना चाहिए, मानसिक तत्वों अथवा चेतनात्मक अनुभवों को मनोविज्ञान में शामिल नहीं करना चाहिए, अथवा वस्तुपरकता को प्रवृत्ति पर अधिक जोर दिया। उनके अनुसार ज्ञानार्जन की प्रक्रिया उत्प्रेरण एवं प्रतिक्रिया के बीच दृढ़ संबंधों पर आधारित है।

थार्नडाइक ने साहचर्य का अध्ययन करने के लिए प्रायोगिक विधि को *सम्बन्धवाद* के रूप में संदर्भित है। उनके अनुसार, मनुष्य के मस्तिष्क में (अ) स्थितियों, स्थितियों के तत्वों तथा स्थितियों के यौगिकों और (ब) प्रतिक्रियाओं, प्रतिक्रिया के लिए तत्परता

सरलीकरणों, वर्जनाओं तथा प्रतिक्रियाओं के निर्देशों के बीच विभिन्न क्षमताओं वाली संपर्क प्रणालियां होती हैं। उन्होंने आगे चलकर इस बात पर जोर दिया कि यदि इन सभी संयोजनों को पूरी तरह तालिकाबद्ध कर दिया जाय तो मानव व्यवहार को समझना बहुत आसान हो जायेगा। यह स्थिति पहले से चली आ रही साहचर्यवाद की दार्शनिक धारणा का सीधा विस्तार ही थी, बस इसमें एक महत्वपूर्ण अन्तर था - विचारों के बीच साहचर्य अथवा संपर्क की बात करने के स्थान पर थॉर्नडाइक ने यर्थागत सत्यापनीय स्थितियां तथा प्रतिक्रियाओं के बीच संपर्कों पर जोर दिया।

यद्यपि थार्नडाइक ने अपना सिद्धांत संदर्भों के अधिक वस्तुपरक ढांचे में विकसित किया था, परन्तु उनका मानसिक क्रियाओं पर आग्रह बना रहा। उन्होंने संतुष्टि, नाराजगी तथा परेशानी की बात उठाई जब वे अपने प्रयोगाधीन जीवधारियों के व्यवहार पर बहस कर रहे थे। उनके शब्द व्यवहारपरक कम थे, मानसवादी अधिक थे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उन पर रोमानेस तथा मोरगन का प्रभाव था। जीवधारियों के व्यवहार का वे वस्तुपरक वर्णन कर रहे थे परन्तु जीवधारियों के सचेतन अनुभवों में प्रायः व्यक्ति परकता समवेशित थी।

यद्यपि थॉर्नडाइक के काम में आत्मनिष्ट झलक थी, उनकी विचारधारा आत्मनिष्ठ परंपरा से प्रभावित थी। उनका तर्क था कि व्यवहार को उसके सरलतम तत्वों में तोड़कर देखा जाना चाहिए। जिन्हें प्रतिक्रिया की इकाइयां कहा जाता है। मनोवादी, विश्लेषणात्मक तथा परमाणुवादी दृष्टिकोण से थॉर्नडाइक ब्रिटेन के अनुभववादियों की सोच को ही आगे ले जा रहे थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संवेदनात्मक प्रतिक्रिया की इकाइयां व्यवहार के तत्व (घटक) हैं, चेतना के नहीं। वे ऐसी निर्माण इकाइयाँ हैं जिनसे अधिक जटिल विचार बनते हैं।

अपनी विचारधारा को समझाने के लिए थार्नडाइक ने सीखने के नियमों का विकास किया। संपर्क में आने और संपर्क तोड़ने की प्रतिक्रियाओं की प्रवृत्ति को उन्होंने *प्रभाव का नियम* (Law of effact) नाम दिया। प्रभाव का नियम स्पष्ट करता है कि कोई क्रिया एक खास परिस्थिति में यदि संतोषप्रद परिणाम देती है तो वह क्रिया उस परिस्थिति से संबद्ध हो जाती है अथवा उसका साचहर्य हो जाता है जिसके कारण जब वही परिस्थिति फिर से उत्पन्न होती है तो उसी क्रिया पहले से कहीं अधिक बार-बार घटित होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके ठीक विपरीत यदि किसी विशेष परिस्थिति में किसी क्रिया का परिणाम संतोषप्रद नहीं आता तो वह क्रिया उस परिस्थिति में असंबद्ध हो जाती है, इसके कारण जब फिर से वही परिस्थिति उत्पन्न होती है तो उस कार्य के दोहराए जाने की संभावना कम हो जाती है। प्रभाव के नियम के अतिरिक्त थार्नडाइक ने *अभ्यास का नियम* अथवा *प्रयोग और अनुप्रयोग के नियम* प्रस्तावित किया। ये नियम बतातें है कि किसी खास परिस्थिति में यदि कोई प्रतिक्रिया की जाती है तो उस परिस्थिति से उस क्रिया का साहचर्य हो जाता है। उसी परिस्थिति में जितनी अधिक बार प्रतिक्रिया की जाती है, उस प्रतिक्रिया का उस परिस्थिति से उतना ही अधिक साहचर्य हो जाता है। इसके ठीक विपरीत यदि लम्बे समय तक लगातार प्रतिक्रिया का प्रयोग किया जाय तो साहचर्य की प्रवृत्ति कमजोर होने लगती है। दूसरे शब्दों में किसी परिस्थिति विशेष में प्रतिक्रिया की पुनरावृत्ति इस प्रतिक्रिया का सुदृढ़ीकरण करती है।

### बॉक्स 3.11 : एडवर्ड ली थार्नडाइक

मनोविज्ञान के इतिहास में एडवर्ड ली थार्नडाइक के अनुसंधानकार्यों को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। जीवधारियों/जानवरों के मस्तिष्क का विश्लेषण करने की थार्नडाइक की नई पद्धति ने मनोवैज्ञानिकों को इतना प्रभावित किया कि अनुसंधानकर्ताओं ने 100 से अधिक प्रयोग यह जानने के लिए किए कि जानवरों की सीखने की प्रक्रिया कैसे संपन्न होती है। अमेरिका के मनोविज्ञान जगत में थॉर्नडाइक की ज्ञानार्जन पद्धति प्रमुख स्थान पर पहुंच गई। उसके शोध में वस्तुपरकता पर जोर दिये जाने से व्यवहार अस्तित्व में आया। वाटसन के शब्दों में - थॉर्नडाइक के शोध कार्य ने व्यवहारवादी मनोविज्ञान में व्यवहारवाद को स्थापित किया।

*अमेरिकन साइकॉलजिस्ट* नामक पत्रिका में जानवरों की बुद्धि पर थार्नडारक के द्वारा किए गये डाक्टोरल शोध प्रबंध की 100वीं वर्षगाठ पर एक विशेष खंड रखा गया था। इस खंड में थॉर्नडाइक जिन्होंने परिकल्पना से प्रयोगात्मक में बदलाव लाये थे, को सबसे प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया था।

चित्र 3.11 : एडवर्ड ली थार्नडाइक (1874–1949)
स्रोत : www.sciencephoto.com

आगे अपने शोध में थार्नडाइक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यदि किसी प्रतिक्रिया के पुरस्कारप्रद परिणाम आते हैं, तो वह क्रिया उस प्रतिक्रिया की तुलना में अधिक प्रभावशाली होते हैं जिसके सामान्यतः पुरस्कारप्रद परिणाम नहीं आते। मनुष्यों को विषय बनाते हुए एक विस्तृत अनुसंधान के अंतर्गत थार्नडाइक ने प्रभाव के नियम की पुनर्निरीक्षण किया। इसके परिणामस्वरूप वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पुरस्कृति की स्थिति में प्रतिक्रिया और सुदृढ़ हो जाती है। परन्तु यदि प्रतिक्रिया पुरस्कृत न होकर, दंडित हो जाए तो उसी अनुपात में कमजोर नहीं पड़ती। अतः थार्नडाइक ने प्रतिक्रिया के दंडित होने की तुलना में पुरस्कृत होने पर अधिक जोर देने वाले अपने विचारों को संशोधित किया।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3**

1) पावलव ने अनुबंधित प्रतिवर्त का आविष्कार किस प्रकार किया?

.....

.....

.....

2) थॉर्नडाइक की विचारधारा में मानसवादी झलक किस प्रकार था, जबकि उन्होंने यंत्रवादी परम्परा का अनुसरण किया था?

.....

.....

.....

## 3.5 साहचर्यवाद की समकालीन भूमिका

साहचर्यवाद व्यावहारिकता रूप से विज्ञान की रूढ़िवादी व्याख्या का पर्याय है। ऐसा माना जाता है कि विज्ञान का प्राथमिक कार्य घटना का वर्णन करना है, प्रकार्यात्मक सम्बंधों की खोज करना है। समकालीन समय में, साहचर्यवाद व्यवस्थित स्थिति के

स्थान पर, कार्य-विधि उपकरण अधिक है। साहचर्यवाद मनोविज्ञान में इस अर्थ में समावेशित है कि चरो का साहचर्य मनोविज्ञान का आधारभूत कार्य माना जाता है।

यह स्पष्ट है कि साहचर्यवादी सिद्धांतों की मनोविज्ञान में प्रमुख भूमिका रहेगी, आवश्यक तथा पर्याप्त सिद्धांत के रूप में इसे स्थापित करने में सहयोग देने वाली विभिन्न प्रणालियों तथा पद्धतियों का भविष्य जो भी हो। यदि व्यवस्थित अथवा सैद्धांतिक रूप में संभव न हो तो कम से कम प्रणाली के रूप में साहचर्यवाद का अस्तित्व रहना चाहिए। यह सत्य है कि साहचर्यवाद एक प्राचीन तथा सरल धारणा है, जो लम्बे समय से चली आ रही है। इससे साहचर्यवाद की सफलता का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, समकालीन व्यवहार पद्धति में साहचर्यवाद की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है। इसका लम्बी अवधि तक बना रहना इसकी जीवंतता को साबित करता है, विशेषकर तब जब अनुभव-जन्य परीक्षण, एबिन्गहास और पावलव के काम के समय से ही चलन में हैं।

## 3.6 सारांश

इकाई के अंत में उन सभी बिन्दुओं को संक्षेप में दुहराना आवश्यक है, जो अब तक अध्ययन किया है:

- साहचर्यवाद को मनोविज्ञान की सबसे पुरानी विचारधारा माना जाता है। इसे मनोविज्ञान की वास्तविक विचारधारा कम और सिद्धांत अधिक माना जाता है।
- साहचर्यवाद का एक प्रमुख विचार यह है कि – ''जटिल विचारों की उत्पत्ति सरल विचारों से होती है।''
- ब्रिटेन के अनुभववादी मानसिक सक्रियता की व्याख्या करने के लिए मुख्य रूप से साहचर्य के सिद्धांतों का प्रयोग करते थे। साहचर्यवादी अवधारणाओं ने अनेक ज्ञानार्जन के सिद्धांतों में केंद्रीय भूमिका निभाई है।
- अनुभववाद एक ऐसा दर्शन है, जो ज्ञानार्जन की अनुभूति पर जोर देता है। अनुभववादी इस बात पर जोर देते हैं कि संवेदी अनुभव ज्ञान को प्राथमिक अनाधार-सामग्री निर्मित करते हैं।
- थॉमस हॉब्स को ब्रिटेन के अनुभववाद का संस्थापक माना जाता है। उनका विश्वास था कि सम्पूर्ण ज्ञान संवेदी अनुभव से प्राप्त होता है। हॉब्स ने जटिल विचार प्रक्रियाओं की व्याख्या करने के लिए साहचर्यवाद के सिद्धांतों का प्रयोग किया था। जॉन लॉक का मुख्य विषय यह समझना था कि मस्तिष्क ज्ञान का अर्जन किस प्रकार करता है।
- भौतिक वस्तुओं को समझाने की प्रक्रिया की व्याख्या करने के लिए बार्कले ने साहचर्य के सिद्धांत का प्रयोग किया था। बर्कले ने बताया था कि अपने परिवेश को समझने के लिए विभिन्न संवेदताओं/अनुभूतियों का साहचर्य होता है। दृश्य गहनता प्रत्यक्षण की व्याख्या करने के लिए बर्कले ने साहचर्य का इस्तेमाल किया था।
- डेविड ह्यूम ने मस्तिष्क के दो अलग-अलग घटकों आकृतियाँ तथा विचार का उल्लेख किया था। विचारों का संयुक्तीकरण कैसे होता है, इसकी व्याख्या करने के लिए ह्यूम ने साहचर्य के तीन नियमों की का वर्णन किया - 'समरूपता अथवा समानता', 'समय व स्थान सापेक्ष सान्निध्य' तथा कारण एवं प्रभाव।

- डेविड हर्टले ने सान्निध्य' तथा पुनरावृत्ति को साहचर्य के दो आधारभूत नियम बताए। इन नियमों के माध्यम से हर्टले ने स्मृति, विचार, भार, तथा ऐच्छिक व अनैच्छिक क्रियाओं की व्याख्या की। ऐसा करके उन्होंने ब्रिटेन का अनुभवाद के क्षेत्र का विस्तार कर दिया।
- अन्य अनुभववादियों की तरह जेम्स मिल भी मानव-मस्तिष्क को मशीन ही मानते थे, परंतु उसे अधिक स्पष्टता और अधिक समावेशी (समझहारी) से युक्त। जेम्स मिल ने व्यक्तिपरक तथा मानसिक गतिविधियाँ की अवधारणा का दृढ़ता पूर्वक खण्डन किया था, इन्हें वे केवल मानसिक भ्रान्तियाँ मानते थे।
- अपने प्रमुख शोध *'एनेलाइजिज ऑफ द फिनोमिना ऑफ द ह्यूमन माइंड'* (1829) में मिल ने मस्तिष्क के अध्ययन के लिए विश्लेषण विधि का प्रस्ताव किया था। इस विधि के अनुसार, मस्तिष्क को समझने के लिए उसे उसके मौलिक घटकों में विभाजन करना पड़ता है।
- जॉन स्टुअर्ट मिल अपने पूर्ववर्ती विचारक अनुभववादियों की यंत्रवादी परिकल्पना से सहमत नहीं थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मस्तिष्क कोई निष्क्रिय संरचना नहीं है, विचारों के साहचर्य में मस्तिष्क की सक्रिय भूमिका रहती है।
- एलेक्ज़ेंडर बेन जॉन स्टुआर्ट मिल के इन विचारों को मस्तिष्क एक सक्रिय संरचना है - इन विचारों का समर्थन किया और उसे मनोरसायन के रूप में आगे बढ़ाया।
- हर्मन एबिन्गहास ने साहचर्यवादी विचारधारा में प्रगाढ़ परिवर्तन किए।
- इवान पावलव साहचर्य को विचारों से हटाकर संवेदना तथा प्रतिक्रिया पर लेकर आये, ज्ञानार्जन की प्रक्रिया पर पावलव के अनुसंधान कार्य ने साहचर्यवाद की धारणा को बदल डाला। पारम्परिक विचारक साहचर्य के लिए व्यक्तिपरक विचारों पर जोर देते थे। पावलव ने वस्तुपरक तथा मात्रात्मक मनोवैज्ञानिक घटनाओं जैसे ग्रंथियों के स्राव तथा मांसपेशीय गतिविधियों को साहचर्य से जोड़ा।
- थार्नडाइक ने इस बात पर जोर दिया कि ज्ञानार्जन की प्रक्रिया उत्प्रेरणा एवं प्रतिक्रिया के बीच दृढ़ सम्बंधों पर आधारित है। थार्नडाइक ने साहचर्य सम्बन्धवाद के अध्ययन के लिए प्रायोगिक विधि अपनाई। थार्नडाइक ने अपने प्रभाव का नियम तथा अभ्यास का नियम द्वारा अपनी ज्ञानार्जन की पद्धति की व्याख्या की है।
- समकालीन दौर में साहचर्यवाद व्यवस्थित स्थिति में होने के स्थान पर, पद्धति-परक उपकरण अधिक है। इसे मनोविज्ञान संकाय में समावेशित है इस अर्थ में चरों के जुड़ाव को आम तौर पर मनोविज्ञान के मौलिक कार्य के रूप में मान्यता दी जाती है।

## 3.7 मुख्य शब्द

**साहचर्यवाद :** मनोविज्ञान की सबसे पुरानी विचारधारा है। साहचर्य का सिद्धांत बताता है कि एक मानसिक अवस्था के दूसरी मानसिक अवस्था के साथ साहचर्य द्वारा मानसिक क्रियाएँ संचालित होती हैं। साहचर्यवाद का प्रमुख सिद्धांत यह है कि - ''सरल विचारों के संयोजन से जटिल विचार की उत्पत्ति होती है।''

**अनुभववाद** : अनुभववाद एक दर्शन है जो ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में अनुभव पर जोर देता है।

**सामीप्यता का नियम** : जब घटनाओं के साथ-साथ होने का अनुभव किया जाता है, तो उनकी स्मृति भी एक साथ आती है और उनके बारे में साथ-साथ सोचा जाता है तो उसे सान्निध्य का नियम कहा जाता है।

**कोरी पट्टी** : जन्म के समय मनुष्य का मस्तिष्क खाली स्लेट होता है जिस पर अनुभव अंकित किये जाते हैं। मस्तिष्क की यह अवस्था 'टाबुला रासा' कहलाती है।

**मनोरसायन** : विचारों के संयुक्तिकरण धारणा – इस धारणा के अनुसार, सरल विचार संयुक्त होकर जटिल विचारों की संरचना करते हैं।

**प्रभावों** : इंप्रेशन (प्रभावों) मानसिक जीवन के मूल तत्व हैं। वर्तमान में, छापों के समकक्ष संवदेनाएँ और प्रत्यक्षण हैं।

**विचार** : उत्प्रेरक के रूप में किसी वस्तु के अनुपस्थित होने पर मस्तिष्क में होने वाले अनुभव विचार कहलाते हैं। आधुनिक समय में बिम्ब या आकृति को विचारों के समतुल्य माना जाता है।

**विश्लेषण विधि** : मस्तिष्क को बेहतर ढंग से समझने के लिए उसे उसके मौलिक घटकों अथवा प्राथमिक अवयवों में विभाजित करना, यह पद्धति इसलिए अस्तित्व में आई क्योंकि मस्तिष्क जैसी जटिल संरचना को अच्छी तरह समझने के लिए उसे उसके लघुतम घटकों में तोड़ा जाना जरूरी है।

**सर्जनात्मक संश्लेषण** : संयोजित होकर बिल्कुल नये गुणों वाले ऐसे यौगिक का निर्माण करते हैं जिसके गुण अपने घटकों (मानसिक तत्वों) के गुणों से सर्वथा भिन्न होते हैं। इसे क्रियेटिव सिंथीसिज कहा जाता है।

**संयुक्त साहचर्य का नियम** : जब एक विचार दूसरे विचार के साथ एक के बाद एक के क्रम में संयोजित न होकर, अनेक विचार एक ही समय में सान्निध्य अथवा साम्य के कारण साहचर्य की अवस्था प्राप्त करते हैं, तब इसे संयुक्त साहचर्य कहा जाता है।

**संरचनात्मक साहचर्य का नियम** : अनुभव की प्रक्रिया के दौरान जो संयोजन मौजूद होते हैं, मस्तिष्क अपनी क्षमता तथा योग्यता से ऐसे संयोजन तैयार करता है जिनके गुण उनसे बिल्कुल अलग होते हैं। मस्तिष्क विभिन्न अनुभवों की स्मृतियों को संशोधित एवं पुनर्गठित करके असंख्य प्रकार के संयोजन तैयार करता है।

**संबन्धवाद** : थार्नडाइक ने साहचर्य का अध्ययन करने के लिए प्रायोगिक विधि अपनाई थी। थार्नडाइक के अनुसार, यदि हम मानव-मस्तिष्क का विश्लेषण करें तो हम पायेंगे कि उस में (अ) स्थितियों, स्थितियों के तत्वों (घटकों) तथा स्थितियों के यौगिकों (संयोजनों) और (ब) प्रतिक्रियाओं प्रतिक्रियाओं के प्रति तत्परताओं, सरलीकरणों वर्जनाओं तथा प्रतिक्रियाओं के निर्देशों के बीच विभिन्न क्षमताओं वाली संपर्क प्रणालियां होती हैं।

**प्रभाव का नियम** : प्रभाव का नियम बताता है कि यदि कोई क्रिया एक खास परिस्थिति में संतोषप्रद परिणाम देती है तो वह क्रिया उस परिस्थिति से सम्बद्ध हो

जाती है, अथवा उसका साहचर्य हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप वही परिस्थिति जब फिर से उत्पन्न होती है तो उसी क्रिया के पहले से कहीं ज्यादा बार घटित होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत यदि किसी विशेष परिस्थिति में किसी क्रिया का परिणाम संतोषप्रद नहीं आता तो वह क्रिया उस परिस्थिति से असम्बद्ध हो जाती है, इसके कारण जब फिर से वही परिस्थिति उत्पन्न होती है, तो उस क्रिया के दुहराए जाने की संभावना कम हो जाती है।

**अभ्यास का नियम :** किसी खास परिस्थिति में यदि कोई प्रतिक्रिया की जाती है तो उस परिस्थिति से उस क्रिया का साहचर्य हो जाता है। उसी परिस्थिति में जितनी अधिक बार प्रतिक्रिया दुहराई जायेगी उस प्रतिक्रिया का उस परिस्थिति से उतना ही अधिक साहचर्य होता जाता है। इसके ठीक विपरीत यदि लम्बे समय तक प्रतिक्रिया का प्रयोग न किये जाने पर साहचर्य की प्रवृत्ति कमजोर होने लगती है।

## 3.8 पुनरावलोकन प्रश्न

1) ..... को ब्रिटेन के अनुभववाद का संस्थापक माना जाता है।

2) एबिन्गहास के प्रयोगों में अध्ययन की विषय-वस्तु ..... है।

3) थार्नडाइक की प्रयोगात्मक प्रणाली को ..... कहा जाता है।

4) थार्नडाइक के द्वारा सुझाए गए सीखने के नियम हैं .....।

5) अनुभववाद क्या है?

6) सीखने की प्रक्रिया के अध्ययन की एबिन्गहास की पद्धति उनकी पूर्ववर्ती अध्ययन पद्धतियों से किस प्रकार भिन्न थी?

7) थॉमस हॉब्स ने विचार-श्रृंखला की व्याख्या किस प्रकार की थी?

8) जॉन लॉक के अनुसार, सरल तथा जटिल विचारों के बीच अंतर को स्पष्ट कीजिए।

9) साहचर्यवाद की मनोरसायन पद्धति क्या है?

10) जॉर्ज बर्कले ने दृश्य गहनता प्रत्यक्षण के समझने के लिए साहचर्यवाद के सिद्धांत का उपयोग कैसे किया था?

11) विचारों के संयुक्तिकरण की व्याख्या के डेविड ह्यूम के साहचर्य के नियमों का वर्णन कीजिए।

12) डेविड हर्टले ने विचारों की उच्च प्रणालियों का वर्णन किस प्रकार किया है?

13) जेम्स मिल द्वारा प्रयोग में लाई गई विश्लेषण विधि का वर्णन कीजिए।

14) जॉन स्टुआर्ट मिल, जेम्स मिल से किस प्रकार भिन्न है?

15) एलेक्ज़ेंडर बेन द्वारा प्रस्तावित साहचर्यवाद के नियमों की व्याख्या कीजिए।

16) पावलव द्वारा बनाए गये सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

## 3.9 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*. Harlow: Pearson Education Ltd.

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology*. Wadsworth: Cengage Learning

Marx, M. H. & Hillix, W. A. (1963). *Systems and Theories in Psychology.* New York: McGraw-Hill

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). *A History of Modern Psychology.* Wadsworth: Thomson Learning, Inc

## 3.10 चित्रों के संदर्भ

Biography.com (2014). Ivan Petrovich Pavlov
https://www.biography.com/scientist/ivan-petrovich-pavlov

Cranston, M. (2020). David Hume.
https://www.britannica.com/biography/David-Hume

Duigan, B. (2020). George Berkeley.
https://www.britannica.com/biography/George-Berkeley

History.com Editors (2019). John Locke.
https://www.history.com/topics/british-history/john-locke

Historyradio.org (2018). Alexander Bain, a neglected pioneer.
https://historyradio.org /2018/10/16/alexander-bain-a-neglected-pioneer/

McCrum, R. (2017). 100 Best Non-fiction Books: No. 61 – On Liberty by John Stuart Mill (1859).
https://www.theguardian.com/books/2017/apr/03/john-stuart-mill-on-liberty-100-best-nonfiction-books-review-robert-mccrum

McCrum, R. (2017). The 100 Best Non-fiction Books: No. 94 – Leviathan by Thomas Hobbes (1651).
https://www.theguardian.com/books/2017/nov/20/the-100-best-nonfiction-books-no-94-leviathan-thomas-hobbes-1651

Science Photo Library (n.d.). Edward Thorndike, American Psychologist
https://www. sciencephoto.com/media/228951/view/edward-thorndike-american-psychologist

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Hermann Ebbinghaus.
https://www. britannica.com/biography/Hermann-Ebbinghaus

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). James Mill. https://www. britannica.com/biography/James-Mill

Wikiquote.org (n.d.). David Hartley
https://en.wikiquote.org/wiki/David_Hartley (philosopher)

## 3.11 ऑनलाइन स्रोत

Biography.com (2014). Ivan Petrovich Pavlov https://www.biography.com/scientist/ivan-petrovich-pavlov

Cranston, M. (2020). David Hume. https://www.britannica.com/biography/David-Hume

Duigan, B. (2020). George Berkeley. https://www.britannica.com/biography/George-Berkeley

Duncan, S. (2020). Thomas Hobbes, Stanford Encyclopaedia of Philosophy, https://plato.stanford.edu/entries/hobbes/

History.com Editors (2019). John Locke. https://www.history.com/topics/british-history/ john-locke

Historyradio.org (2018). Alexander Bain, a neglected pioneer. https://historyradio.org/ 2018/10/16/alexander-bain-a-neglected-pioneer/

Macleod, C. (2020). John Stuart Mill, Stanford Encyclopaedia of Philosophy. https://plato.stanford.edu/entries/mill/

Mandelbaum, E. (2020). Associationist Theories of Thought, Stanford Encyclopaedia of Philosophy, https://plato.stanford.edu/entries/associationist-thought/

The Basics of Philosophy (n.d.). British Empiricism, https://www.philosophybasics.com /movements_british_empiricism.html#:~:text=British%20Empiricism%20is%20a%20practical,George%20Berkeley%20and%20David%20Hume.

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). David Hartley: British Physician and Philosopher. https://www.britannica.com/biography/David-Hartley

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Edward L. Thorndike. https://www. britannica.com/biography/Edward-L-Thorndike

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Hermann Ebbinghaus. https://www. britannica.com/biography/Hermann-Ebbinghaus

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). James Mill. https://www.britannica.com /biography/James-Mill

पुनरावलोकन प्रश्नों के उत्तर (1-4)

1) थॉमस हॉब्स (2) निरर्थक पद (3) सम्बन्धवाद (4) प्रभाव का नियम (5) अभ्यास का नियम

# इकाई 4 संरचनावाद*

संरचना


4.0 प्रस्तावना

4.1 संरचनावाद के पूर्ववर्ती कारक

4.1.1 हेल्महोल्ज और फेकनर

4.1.2 विलिहम वुण्ट

4.2 टिचनर के संरचनावाद की विषय-वस्तु

4.2.1 चेतन अनुभवों का विचार

4.2.2 अंतर्निरीक्षण

4.2.3 यांत्रिकी उपागम

4.2.4 चेतना के तत्व

4.3 आलोचनाएं

4.3.1 अन्तर्निरीक्षण की आलोचना

4.3.2 टिचनर के संप्रदाय की अतिरिक्त आलोचनाएँ

4.4 संरचनावाद का योगदान

4.5 सारांश

4.6 मुख्य शब्द

4.7 पुनरावलोकन प्रश्न

4.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

4.9 चित्रों के संदर्भ

4.10 ऑनलाइन संसाधन


## सीखने का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न में सक्षम होंगे :

- संरचनावाद के सम्प्रदाय की विषय-वस्तु की व्याख्या करने में;
- एडवर्ड टिचनर के योगदान की चर्चा करने में; और
- मनोविज्ञान में संरचनावाद के योगदान को स्पष्ट करने में।

## 4.0 प्रस्तावना

संरचनावाद, जर्मनी में पाया गया एक व्यवस्थित आंदोलन था, जिसे उच्च विकसित आत्म दर्शनात्मक मनोविज्ञान के विचार के रूप में समझा जा सकता है। एडवर्ड ब्रेडफोर्ड टिचनर के कार्यों के द्वारा यह अंतिम अमेरिकन प्रारूप में दर्शाया गया था।


* डॉ. सैफ़ आर. फ़ारूकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

1898 में अपने दृष्टिकोण को दूसरों से अलग करने के लिए, टिचनर संरचनावाद मनोविज्ञान या संरचनावाद नाम के साथ आए।

### बॉक्स 4.1 : एडवर्ड बेडफोर्ड टिचनर

टिचनर जब ऑक्सफोर्ड में थे तब वुण्ट के मनोविज्ञान में उनकी रुचि उत्पन्न हुई। वह लिपज़िग विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए काफी उत्साहित थे, उस समय यह स्थान वैज्ञानिक अध्ययन के लिए जाना जाता था। 1892 में टिचनर ने वुण्ट के निर्देशन में लिपज़िग से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। 1893 से 1900 के बीच टिचनर कई शैक्षणिक गतिविधियों, जैसे अपनी प्रयोगशाला स्थापित करना, शोध करना और लेखक लिखना, इसी दौरान उन्होंने 60 से अधिक लेख भी प्रकाशित कराए। कार्नेल विश्वविद्यालय में अपने कार्यकाल के 35 वर्षों के दौरान उन्होंने 50 से अधिक पीएचडी शोध प्रबंधों का निर्देशन किया। उनकी महत्वपूर्ण पुस्तकें *एन आउटलाइन ऑफ साइकोलॉजी* (1890), *दी प्राइमर ऑफ साइकोलॉजी* (1989), और एक्सपेरिमेन्टल साइकोलॉजीः ए मैनुअल फार लेबोरेटरी प्रैक्टिस 1901-1905)।

चित्र 4.1: एडवर्ड ब्रेडफोर्ड टिचनर (1867–1927)
स्रोत : www.verywellmind.co

टिचनर का संप्रदाय, उनके गुरु विलियम वुण्ट के मनोविज्ञान का उन्नत संस्करण था। विलिहम वुण्ट के निष्ठावान अनुयायी होने का दावा करने के बावजूद जब वह वुण्ट सम्प्रदाय के मनोविज्ञान को जर्मनी के संयुक्त राज्य अमेरिका में लाने पर उसमें उन्होंने नाटकीय रूप से संशोधन और परिवर्तित किया। संरचनावाद को संयुक्त राज्य अमेरिका में बहुत लोकप्रियता हासिल हुई, जो लगभग दो दशकों तक चली, जब तक इसे नए आंदोलनों द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया गया।

संचनावाद के निम्नलिखित उद्देश्य थेः

- मूल तत्वों के संदर्भ में चेतना के घटकों का वर्णन करना;
- इन मूल तत्वों को कैसे संयोजित किया जाता है, को बताना;
- तंत्रिका तंत्र (यानि, शारीरिक प्रक्रियाएं) का चेतना के तत्वों के साथ सम्बन्ध की व्याख्या करना। टिचनर ने बताया कि शारीरिक प्रक्रियाएं लगातार एक आधार प्रदान करती है जो मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को एक निरतंरता देता है, अन्यथा इसमें कमी होती। इसके कारण, मानसिक घटनाओं की कुछ विशेषताओं को तंत्रिका तंत्र, जो खुद चेतना अनुभवों का कारण नहीं बनता है के मध्यम से व्याख्या की जा सकती है।

संरचनावाद के अनुसार, मनोविज्ञान की परिभाषा इस प्रकार है- ''**मनोविज्ञान परिचय के माध्यम से सामान्यीकृत वयस्क सामान्य मानव मस्तिष्क का विश्लेषणात्मक अध्ययन है**''।

### बॉक्स 4.2 : वुण्ट–टिचनर विवाद

टिचनर ने खुद को हमेशा वुण्ट का अनुयायी कहा। उनका संरचनावाद वुण्ट के मनोविज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। यद्यपि, सुझाव किये गये हैं कि वुण्ट और टिचनर के संप्रदाय एक दूसरे से काफी भिन्न हैं। ऐसा कहा जाता है कि टिचनर अपने दृष्टिकोण के साथ आया था, जिसे उन्होंने संरचनावाद कहा था। टिचनर के मनोविज्ञान की व्याख्या करने के लिए ''संरचनावाद'' नाम ही उपयुक्त है, और इसका वुण्ट के साथ कम सम्बन्ध है।

## 4.1 संरचनावाद के पूर्ववर्ती कारक

### 4.1.1 हेल्महोल्ज और फेकनर

1858 में वुण्ट, **हर्मन वोन हेल्महोल्ज** के सहायक के रूप में नियुक्त हुए और दोनों ने अगले 13 वर्षों तक एक ही शारीरिक प्रयोगशाला में एक साथ काम किया। विलियम वुण्ट ने हेल्महोल्ज की विधियों का प्रयोग किया और हेल्महोल्ज की संवेदी शरीर विज्ञान को अपने काम का आधार बनाया। बाद में टिचनर ने अपने संरचनावाद के लिए वुण्ट की विधियों को अपनाया।

1860 में वुण्ट के मनोविज्ञान के क्षेत्र में काम करने से लगभग 15 साल पहले **गुस्ताव थियोडोर फेकनर** ने अपनी पुस्तक *एलीमेंटस ऑफ साइकोफीजिक्स* (*Element of Psychophysics*) प्रकाशित की। वुण्ट ने प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में फेकनर के काम को ''पहली जीत'' के रूप में स्वीकारा और मान्यता भी दी। टिचनर ने भी फेकनर को ''प्रयोगात्मक मनोविज्ञान'' के जनक के रूप में उल्लिखित किया।

### 4.1.2 विलिहम वुण्ट

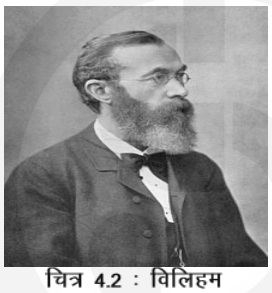

चित्र 4.2 : विलिहम मेक्समिलन वुण्ट (1832-1920)
स्रोत :
https://en.wikipedia.org/wiki/Wilhelm_Wundt

यद्यपि यह विवाद है कि टिचनर का सम्प्रदाय वुण्ट से बहुत अलग था पर संरचनावाद के बारे में बात करना और वुण्ट के मनोविज्ञान का उल्लेख न करना। यह पूरी तरह से असम्भव है। वुण्ट के मनोविज्ञान की जड़े प्राकृतिक विज्ञान में है, जैसा कि यह मनोविज्ञान का क्षेत्र है, जिसमें भौतिकी, रयासन विज्ञान और जीव विज्ञान की सामान्य विश्लेषणात्मक लक्ष्य और कार्य प्रणाली को अपनाया। यह उपागम इस बात पर जोर देता है कि मनोविज्ञान में, मनोवैज्ञानिक घटनाओं को चर के संदर्भ में परिभाषित कर अध्ययन किया जाना चाहिए और फिर इन चरों को प्रयोगात्मक विधि से अध्ययन कर, विश्लेषणात्मक जांच करनी चाहिए। इस सम्प्रदाय के तहत मनोविज्ञान समान्य वयस्क मानव मन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए '*अन्तदर्शन* विधि का उपयोग करता है। इस उपागम का नेतृत्व विलियम वुण्ट द्वारा किया गया था, और बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका में टिचनर द्वारा इसे और बढ़ावा दिया गया था। इस सम्प्रदाय को कभी-कभी ''*अन्तर्वस्तु मनोविज्ञान*'' के रूप में संदर्भित किया जाता है, जैसा कि इसका उद्देश्य मस्तिष्क के विचार का अध्ययन करना था।

इसके अतिरिक्त, टिचनर ने '*मानसिक संरचना* पर जोर दिया और इस सम्प्रदाय का नाम, 1898 में अपने लेख में '*संरचनात्मक मनोविज्ञान* दिया।

इस सम्प्रदाय को नाम दिये जाने के बावजूद, इसका प्रमुख लक्ष्य मानव मस्तिष्क का विश्लेषण करने के उद्देश्य से आत्म-निरीक्षण की प्रयोगात्मक विधि को सावधानीपूर्वक लागू करना था, जिसे प्रशिक्षित वैज्ञानिकी द्वारा किया जा रहा था। इसी अनुक्रिया से इस सम्प्रदाय का उद्देश्य ''चेतना का रसायन विज्ञान'' को विकसित करना था।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1**

1) संरचनावाद के उद्देश्य क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) हेल्महोल्ज, फेकनर और वुण्ट ने किस प्रकार संरचनावाद में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

## 4.2 टिचनर के संरचनावाद की विषय-वस्तु

### 4.2.1 चेतन अनुभवों का विचार

टिचनर ने कहा कि चेतन अनुभव मनोविज्ञान की विषय-वस्तु है क्योंकि यह चेतन अनुभव उस व्यक्ति पर निर्भर करते है जो इन्हें वास्तविक समय में अनुभव कर रहा होता है। इस प्रकार का अनुभव जो मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते है, अलग है उनसे जो दूसरे क्षेत्रों के वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं। उदाहरण के लिए, ध्वनि या प्रकाश जैसी घटनाओं का अध्ययन दोनों भौतिकवादी और मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया जा सकता है। अन्तर यह है कि जबकि भौतिकशास्त्री इस घटना में शामिल भौतिक प्रक्रियाओं को ध्यान में रखकर अध्ययन करते हैं, मनोवैज्ञानिक इन घटनाओं की जांच, मानवों के निरीक्षण और अनुभव को ध्यान में रखकर करते हैं। इस तरह से, हम कह सकते हैं कि दूसरे प्राकृतिक विज्ञान व्यक्ति के अनुभव से स्वतंत्र हैं। भौतिकी से एक उदाहरण लेते हुए टिचनर ने इसे और समझाया। एक कमरे में तापमान को मापा जा सकता है, हम कह सकते हैं, 85 डिग्री फॉरेनहाइट, भले ही कोई भी इस महसूस करने या अनुभव करने के लिए कमरे में मौजूद हो। हालांकि, यह केवल तब होता है जब पर्यवेक्षक इस विशेष कमरे में मौजूद हो और वह गर्मी में असहज महसूस करने की रिपोर्ट कर सके। इसलिए, गर्मी का अनुभव या भावना अनुभव करने वाले व्यक्तियों पर निर्भर करता है, अर्थात जो लोग कमरे में मौजूद होते हैं। टिचनर के अनुसार, इस प्रकार का चेतन अनुभव, मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान का सिर्फ सही केन्द्र था। 1909 में प्रकाशित उनकी पुस्तक *'ए टेक्स्टबुक ऑफ साइकोलॉजी* में टिचनर ने दो प्रकार के अनुभव, निर्भर अनुभव और स्वतंत्र अनुभव के बीच अन्तर किया। टिचनर ने चेतन अनुभवों का अध्ययन करते समय मानसिक प्रक्रिया को निरीक्षण की वस्तु के साथ भ्रमित करने के खिलाफ भी चेतावनी दी है, जिसे उन्होंने 'उद्दीपक त्रुटि' के रूप में नामित किया। उदाहरण के लिए, पयवेक्षक जो एक सेब देखकर आकार, रंग और चमक आदि के तत्वों के संदर्भ में जो कुछ भी अनुभव करता है, का लेखा-जोखा देने के बजाय, उस वस्तु को एक सेब के रूप में वर्णित करता है, वास्तव में वह 'उद्दीपक

त्रुटि' कर रहा होता है। अवलोकन की वस्तु का वर्णन चेतन अनुभव के तत्वों के संदर्भ में किया जाना है, न कि रोजमर्रा की भाषा में।

पर्यवेक्षक जब चेतन सामग्री के स्थान पर उद्दीपक वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करते है, तब अपने स्वयं के तात्कालिक अनुभव से अतीत में वस्तु के बारे में जो कुछ भी सीखा है, से उसे अलग करने में असमर्थ होते हैं। वे सभी पर्यवक्षेक वस्तु के रंग आकार और बनावट के संबंध में जान सकते हैं। यदि पर्यवेक्षक रंग, चमक और स्थानिक विशेषताओं के अलावा अन्य को वर्णित करते हैं, वे वास्तव में वस्तु का निरीक्षण नहीं कर रहे होते है, बल्कि इसकी व्याख्या कर रहे होते है। परिणामस्वरूप वे मध्यस्थता के अनुभव को समझ रहे होते हैं न कि तात्कालिक अनुभवों को।

चेतना को टिचनर द्वारा हमारे अनुभवों के योग या समुच्चय के रूप में परिभाषित किया था, क्योंकि वे निश्चित अवधि में मौजूद होते हैं। मन उनके अनुसार पूरे जीवनकाल में संचित हमारे अनुभवों का योग है। चेतना और मन लगभग समान होते हैं, इनमें अन्तर सिर्फ इतना होता है कि चेतना में एक निश्चित समय पर होने वाली मानसिक प्रक्रियाएं होती हैं जबकि मन में इन प्रक्रियाओं का योग होता है।

टिचनर द्वारा परिकल्पित संरचनावाद मनोविज्ञान' एक शुद्ध विज्ञान था, और वह मनोवैज्ञानिक ज्ञान को इसके लिए लागू करने में दिलचस्पी नहीं रखता थे। उनके अनुसार, मनोविज्ञान का उद्देश्य समाज को सुधारना या बीमार मन का इलाज करना नहीं था, बल्कि मन की संरचना के तथ्यों को खोजना था। उनका विचार था कि वैज्ञानिकों को केवल अपने काम के व्यावहारिक मूल्य के बारे में चिन्तन नहीं करना चाहिए। यह इस कारण से था कि उन्होंने पशु मनोविज्ञान बाल मनोविज्ञान और मनोविज्ञान के दूसरे सभी क्षेत्रों के विकास का पक्ष नहीं लिया, जो उनके आत्म निरीक्षण प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की चेतन अनुभवों की धारणा के अनरूप नहीं था।

### 4.2.2 अंतर्निरीक्षण

अंतर्निरीक्षण, या आत्म अवलोकन का वह रूप जिसे टिचनर ने बढ़ावा दिया, पर्यवेक्षकों पर निर्भर करता था, जिन्हें केवल निरक्षित या अनुभव किये गये उद्दीपक के नाम की रिपोर्टिंग के बजाय उनके चेतन अनुभवों के तत्वों का वर्णन करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था, जिससे वे परिचित थे। टिचनर ने कहा कि हम सभी उत्तेजना के संदर्भ में अपने अनुभवों का वर्णन करना सीखते हैं, उदाहरण के लिए, एक लाल गोल वस्तु सेब है, और यह कि रोजमर्रा की जिन्दगी में यह फायदेमंद और आवश्यक है।

हालांकि, इस प्रथा को उनकी मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में भुला देना पड़ता था। टिचनर ने आत्मदर्शन के इस विधि के लिए क्रमबद्ध प्रयोगात्मक आत्मदर्शन पद का प्रयोग किया, इसे **ओसवाल्ड कुल्पे** द्वारा दिया गया। टिचनर ने कुल्पे द्वारा उपयोग किये गये तरीके के समान, अंतर्निरीक्षण के उद्देश्य से अपने विषयों की मानसिक गतिविधियों की आत्म परक, विस्तृत, एवं गुणात्मक रिपोर्ट का प्रयोग किया।

इसके अलावा, टिचनर ने वुण्ट के आत्मदर्शन के दृष्टिकोण का विरोध किया, क्योंकि उनका मानना है कि इसके वस्तुपरक और गुणात्मक मापन के केन्द्र बिन्दु के साथ, यह उपागम उनके मनोविज्ञान में प्राथमिक संवेदनाओं और चेतना की छवियों का अनावरण करने के लिए उपयुक्त नहीं था। टिचनर इसमें वुण्ट से अलग थे, जबकि वुण्ट ने मानसिक बोध के माध्यम से तत्वों के संश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित किया था।

टिचनर जटिल चेतन अनुभवों, इसके तत्वों व घटकों के भाग विश्लेषण करने से सम्बन्धित थे। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि टिचनर ने हिस्सों पर जोर दिया और वुण्ट ने सम्पूर्ण पर जोर दिया। ब्रिटिश साहचार्यवादियों और अनुभववादियों के साथ संगति दिखाते हुए, टिचनर का उद्देश्य मन के तथाकथित परमाणुओं को खोज करना था। टिचनर के वुण्ट के साथ अध्ययन के लिए लिपज़िग जाने से पहले उनका आत्मदर्शन का उपागम पहले से ही विकसित होना शुरू हो गया था। यह सुझाव दिया जाता है कि टिचनर जेम्स मिल के लेखनी से उस समय से प्रभावित थे, जब वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में नामांकित थे (*डेजिगर*, 1780)।

### 4.2.3 यांत्रिकी उपागम

दर्शनशास्त्र की यांत्रिकी तंत्र आत्मा ने भी टिचनर को प्रेरित किया, जैसा कि उन पर्यवेक्षकों की छवि में देखा जा सकता है, जो उनकी प्रयोगशाला में डेटा लाते थे। टिचनर द्वारा प्रकाशित शोध रिपोर्टों में प्रयोज्याओं को अक्सर अभिकर्मकों के रूप में संदर्भित किया गया था। प्राकृतिक विज्ञानों में अभिकर्मक एक शब्द है, जिसका उपयोग रसायन वैज्ञानिकों द्वारा पदार्थों को निरुपित करने के लिए किया जाता, जिसका उपयोग अन्य पदार्थों का पता लगाने, मापने या उनकी जांच करने के लिए किया जाता है, क्योंकि उनकी कुछ प्रतिक्रियाओं से गुजरने की क्षमता होती है।

एक अभिकर्मक एक निष्क्रिय एजेंट होता है, जिसका उपयोग रासायनिक प्रतिक्रियाओं में किया जाता है, ताकि किसी अन्य पदार्थ से प्रतिक्रिया या शीघ्र प्रतिक्रिया हो सके। टिचनर ने इस अवधारणा को अपनी प्रयोगशाला में उसके मानव पर्यवेक्षकों पर लागू किया और अपने प्रयोज्याओं को यांत्रिकी रिकॉर्डिंग साधनों की तरह माना, जिन्होंने उद्दीपक की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए प्रतिक्रिया और उत्तर दिए। प्रयोज्याओं को निष्पक्ष, अलग थलग मशीनों की तरह समझा गया। प्रशिक्षित पर्यवेक्षक इतने स्वचालित और मशीनीकृत हो गये कि प्रयोज्याओं को यह महसूस नहीं हुआ कि वे कुछ चेतन प्रक्रिया को अंजाम दे रहे है, यह वुण्ट के विचार के अनुसार भी था।

यदि हम पर्यवेक्षकों को प्रयोगशाला में मशीन मानते हैं, फिर यह सुझाव देना आसान है कि सभी मानव मशीन है। यह सोच ब्रहमाण्ड के गैलीलियन न्यूटोनियन यांत्रिक से प्रभावित थी, एक ऐसा विचार जो बुनियादी संरचनावाद की धीमी गति के बाद भी अस्तित्व में था।

मानव एक मशीन की छवि 20वीं शताब्दी की पहली छमाही तक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की विशेषता बनी रही, जिसे देखा जा सकता है, यदि हम मनोविज्ञान के इतिहास का अध्ययन करते हैं, टिचनर ने अपने मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से आत्मदर्शन निरीक्षण का मूल्यांकन करने के लिए कहा। वैज्ञानिक प्रयोग के नियमों का सावधानीपूर्वक पालन करते हुए, उन्होंने बताया कि एक प्रयोग एक निरीक्षण है जो दोहराया, अलग और परिवर्तित किया जा सकता है। टिचनर के अनुसार, यदि किसी निरीक्षण को बार-बार दोहराया जाता है, तो देखा गया है कि उसके स्पष्ट रूप से देखने और उसका सही वर्णन करने की अधिक सम्भावना होगी।

इसके अलावा एक निरीक्षण जितना अधिक कठोरता से होगा, निरीक्षण का कार्य उतना आसान होगा, अप्रासांगिक परिस्थितियों से विचलित होने या अप्रासंगिक बिन्दु पर जोर देने की संभावना कम होगी। अंत में, यदि निरीक्षण व्यापक रूप से विविध है तो अनुभव की सामान्यीकरण निर्धारित करना और आसान होगा और नियमों को खोजने

की सम्भावना उच्च होगी। टिचनर की प्रयोगशाला में प्रयोज्या या अभिकर्मकों ने विभिन्न प्रकार के उद्दीपकों पर आत्मदर्शन के द्वारा अपने अनुभवों के तत्वों का लम्बा, विस्तृत निरीक्षण किया।

### 4.2.4 चेतना के तत्व

टिचनर ने प्रस्तावित किया कि मनोविज्ञान के तीन महत्वपूर्ण लक्ष्य थेः

- अपने सरलतम घटकों के प्रति चेतन प्रक्रियाओं को कम करने के लिए।
- उन नियमों की पहचान करना जिनके द्वारा चेतना के तत्व जुड़े हैं।
- तत्वों को उनकी शारीरिक स्थितियों से जोड़ने के लिए।

इसलिए यह काफी स्पष्ट है कि टिचनर के संरचनात्मक मनोविज्ञान का लक्ष्य प्राकृतिक विज्ञान के समान था। एक बार जब वैज्ञानिक प्राकृतिक दुनिया के उस हिस्से पर निर्णय लेते हैं जिस पर वे अध्ययन करना चाहते हैं उन तत्वों की पहचान या खोज करने के लिए आगे काम करते है, दिखाते है कि किस प्रकार जटिल घटनाओं को बनाने के लिए इन तत्वों को तैयार किया जाता है, और अंत में इन प्रक्रियाओं को संचालित करने वाले नियम तैयार करते है।

टिचनर के अनुसंधान का एक बड़ा हिस्सा पहले लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करता है, अर्थात चेतना के तत्वों की पहचान। टिचनर के अनुसार, चेतना की तीन प्राथमिक अवस्थाएं होती हैं -

- संवेदनाएं
- प्रतिमाएं
- भावात्मक स्थितियां।

संवेदनाएं, प्रत्यक्षीकरण का मूल तत्व है, जो प्राकृतिक दुनिया में मौजूद भौतिक वस्तुओं से उत्पन्न गन्ध, दृश्यों, आवाज और दूसरे अनुभवों में हो सकते हैं। प्रतिमाएं विचारों के तत्व हैं – जो इस प्रक्रिया में पाये जाते हैं, जो पिछले अनुभवों को दर्शाते है, अर्थात् वो अनुभव जो वास्तव में वर्तमान में मौजूद नहीं हैं, उदाहरण के लिए – एक अतीत की घटना की स्मृति, भावात्मक स्थितियां, या भावनाएं, संवेगों के तत्व हैं और प्यार, क्रोध, द्वेष, सुख-दुःख जैसे अनुभवों में पाये जाते हैं।

टिचनर ने अपनी पुस्तक *'ऐन आउटलाइन आफ साइकोलॉजी'* (1986) में संवेदना के सभी तत्वों की सूची दी, अपने व्यापक शोध में दी। सूची में लगभग 44,500 वैयक्तिक संवेदना गुण थे, इनमें से 11,600 की श्रवण संवेदनाओं के रूप में पहचाना गया था, जबकि व्यक्ति 32,820 की दृश्य संवेदनाओं के रूप में पहचाना गया था। टिचनर का मानना था कि इनमें से प्रत्येक तत्व चेतन था और सभी अन्यों से भिन्न था और जो दूसरे तत्वों के साथ जुड़कर प्रत्यक्षीकरण और विचारों को उत्पन्न करेगा।

ये सभी तत्व यद्यपि मूलभूत और अलघुकरणीय हैं इन्हें वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे कि रासायनिक तत्वों की कक्षाओं में वर्गीकृत किया जाता है, इन सभी मानसिक तत्वों में कुछ गुण और विशेषताएं होती हैं, जो हमें इनकी सरलता के बावजूद विभिन्न तत्वों के बीच अन्तर करने की अनुमति देती है।

टिचनर ने वुण्ट के तीव्रता और गुणवत्ता के गुणों में स्पष्टता और अवधि को जोड़ा। उन्होंने इन चार विशेषताओं को सभी संवेदनाओं के लिए आवश्यक माना, ये सभी तरह के अनुभवों में कुछ हद तक उपस्थित रहती हैं:

- *गुणवत्ता* एक विशेषता है, जैसे ''गर्म'' और ''लाल'' जो स्पष्ट रूप से प्रत्येक तत्व को हर दूसरे तत्व से अलग करते हैं।
- *तीव्रता* एक संवेदना की ताकत, कमजोरी, प्रबलता, या चमक को संदर्भित करता है।
- *अवधि*, कोर्स या समय जब तक संवेदना रहती है।
- *स्पष्टता* का सम्बन्ध महत्वपूर्ण भूमिका के साथ है, जो चेतन अनुभवों में अवधान निभाता है। अनुभव जिस पर हमारा ध्यान निर्देशित होता है, उनके मुकाबले स्पष्ट होते हैं, जिन अनुभवों की तरफ हमारा ध्यान निर्देशित नहीं होता है।

जबकि ये सभी चार विशेषताएं संवेदनाओं और प्रतिमाओं में मौजूद होते है, सिर्फ गुणवत्ता, तीव्रता और अवधि भावात्मक अवस्था में मौजूद होते है। स्पष्टता, टिचनर के अनुसार भावात्मक अवस्था में कम होती है, क्योंकि वह मानते थे कि संवेग या भावना एक तत्व पर सीधे ध्यान केन्द्रित करना असम्भव है, ऐसा करने के प्रयास में, चेतन अनुभवों की भावात्मक विशेषता जैसे दुःख या खुशी गुम हो जाती है। कुछ संवेदन प्रक्रियाएं विशेषकर वे जिसमें स्पृश और दृश्य शामिल होता है, में एक और गुण होता है, जिसे '*व्याप्ति* कहते हैं, क्योंकि वे भी स्थान लेते हैं। सभी चेतन प्रक्रियाओं को इनमें से एक गुण पर कम करना सम्भव है।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2**

1) उद्दीपक त्रुटि करने से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) टिचनर के उपागम को यंत्र कैसे माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

## 4.3 आलोचनाएं

ऐतिहासिक रूप से कहा जाये तो ज्यादातर ऐसा होता है कि लोग एक क्षेत्र में प्रमुखता प्राप्त करते है, जब वे पुराने दृष्टिकोण को अस्वीकार या उसका सामना करते हैं। हालांकि टिचनर एक अपवाद हैं, क्योंकि उन्होंने तब भी मजबूती से खड़े होने का विकल्प चुना, जबकि बाकी सब उनसे आगे निकल रहे थे।

टिचनर का औपचारिक रूप से प्रकाशित बयान वही रहा, जबकि 20वीं सदी के दूसरे दशक के आसपास यूरोपियन और अमेरिकन मनोविज्ञान विचारकों का बौद्धिक वातावरण बदल चुका था। परिणामस्वरूप कई मनोवैज्ञानिकों ने अपने संरचनात्मक मनोविज्ञान में अप्रचलित सिद्धान्तों और विधियों का पालन करने के असफल प्रयास किए। टिचनर ने माना कि वह मनोविज्ञान की नींव रख रहे हैं, परन्तु उनका प्रयास, मनोविज्ञान के इतिहास में सिर्फ एक चरण में बदल गया। यद्यपि संरचनावाद के क्षेत्र ने टिचनर की मृत्यु के साथ अपना आकर्षण खो दिया। अतः मुख्य बिन्दुओं पर यह सफलतापूर्वक जीवित रहा, इसका कारण उनका सराहनीय व्यक्तित्व था।

### 4.3.1 अंतर्निरीक्षण की आलोचना

संरचनावाद में अंतर्निरीक्षण की विधि के आसपास की आलोचनाओं का सम्बन्ध वुण्ट के आन्तरिक प्रत्यक्षीकरण विधि के मुकाबले टिचनर और कुलपी की प्रयोगशालाओं में उपयोग हो रही निरीक्षण के प्रकार से था। जबकि टिचनर और कुलपी ने चेतना के मूल तत्वों की आत्मपरक रिपोर्ट पर काम किया। वुण्ट का सम्बन्ध बाहरी उत्तेजनाओं पर वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक प्रतिक्रियाओं पर था। यद्यपि टिचनर ने अपने मनोविज्ञान में प्रत्युक्त अंतर्निरीक्षण विधि को संशोधित और सुधार किया ताकि इसे और अधिक सटीक बनाया जा सके, जिससे यह विज्ञान की आवश्यकताओं और सिद्धांतों के अनुरूप हो सके। इसके बाद भी इसमें कमियां पायी गयीं, जो इस प्रकार हैं :

- पहली आलोचना का सम्बन्ध परिभाषा से है। यद्यपि टिचनर ने विशेष प्रयोगात्मक स्थितियों से अन्तर्निरीक्षण विधि को सम्बन्धित कर इसे परिभाषित करने का प्रयास किया, पर वह इसमें असफल रहे। पर्यवेक्षक निरीक्षण में जिस कोर्स का पालन करता था, वह चेतन निरीक्षक की प्रकृति के साथ, परीक्षण के लक्ष्यों के साथ और/या प्रशिक्षक द्वारा दिये गये निर्देशों के साथ व्यापक तौर पर अलग था। इसलिए आत्म-दर्शन को एक सामान्य पद के रूप में माना गया, जिसमें बड़ी मात्रा में विशेष कार्यविधि प्रक्रियाएं शामिल हैं।

- टिचनर की कार्यप्रणाली में आलोचना का दूसरा स्रोत आत्म-दर्शन में प्रशिक्षण प्रक्रिया था, या और शुद्ध करके कहे तो, आत्म-दर्शनकर्ताओं को क्या करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था, इसमें अनिश्चतता थी। उदाहरण के लिए, वाक्य ''मैंने एक कुर्सी देखी'' में संरचनावादियों के लिए कोई वैज्ञानिक अर्थ नहीं है, शब्द ''कुर्सी'' को एक अर्थ शब्द माना जाता है, जो पहले सीखे गये और सार्वभौमिक रूप से संवेदनाओं के विशिष्ठ संयोजन के बारे में सहमत ज्ञान पर आधारित है, जिसे हमने कुर्सी के रूप में पहचानना सीखा है। इसलिए निरीक्षण, ''मैं एक कुर्सी देखता हूं'' संरचनात्मक मनोवैज्ञानिकों को पर्यवेक्षकों के सचेत अनुभव के तत्वों के बारे में कुछ भी नहीं बताना। संरचनावादी अनुभव के विशिष्ट प्राथमिक रूपों से सम्बन्धित होते हैं न कि संवेदनाओं के संग्रह के साथ, संक्षेप में

एक अर्थ शब्द। पर्यवेक्षक जो ''कुर्सी'' कह रहे थे टिचनर ने इसे ''उद्दीपक त्रुटि'' के रूप में संदर्भित किया। लेकिन प्रशिक्षकों के अनुभवों की कैसे व्याख्या कर सकते हैं यदि शब्दकोष से सामान्य शब्द हटाये जाने थे। यह सुझाव दिया गया कि आत्म निरीक्षण की एक भाषा विकसित करनी होगी। चेतन प्रक्रियाओं को शुद्धता और सटीकता के साथ निर्धारित करने के लिए, टिचनर (वुण्ट, ने भी) प्रयोगात्मक स्थितियों पर नियंत्रण करने पर जोर डाला, ताकि कोई भी दो पर्यवेक्षकों के समान अनुभव के परिणाम एक दूसरे को समर्थन दे। यह पर्यवेक्षकों के लिए एक कामकाजी शब्दावली विकसित करने की सम्भावना की ओर भी इशारा करता है, जो अर्धपूर्ण शब्दों से मुक्त था, क्योंकि ये अत्यधिक समान अनुभव नियंत्रित परिस्थितियों में हुए थे। अंततः यह रोजमर्रा के जीवन में हमारे साझा अनुभवों के कारण है कि हम परिचित शब्दों के लिए सामान्य अर्थों तक पहुंचते हैं। हालांकि, आत्मदर्शन की एक भाषा विकसित करने का विचार की केवल कल्पना की जा सकती है, लेकिन कभी भी महसूस नहीं किया जा सकता है।

- फिर से प्रयोगात्मक स्थितियों को कठोरता से नियन्त्रित करने के बावजूद पर्यवेक्षकों ने विभिन्न प्रयोगशालाओं में बार-बार अलग परिणाम प्राप्त किएं। यहां तक कि एक ही प्रयोगशाला में आत्मदर्शनकर्त्ता समान उद्दीपक सामग्री पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अक्सर समान टिप्पणियों को प्राप्त करने में विफल रहे। भले ही, टिचनर ने दृढ़ता से यह विश्वास किया कि समान परिणाम प्राप्त किये जायेगे और अंत में समझौता हो जायेगा। भले ही, संरचनात्मकता का सम्प्रदाय अधिक समय तक रहता, यदि वास्तव में एकरूपता हासिल की गयी होती।
- आलोचकों ने यह भी तर्क दिया कि आत्म-दर्शन वास्तव में '*पश्चावलोकन*' का एक रूप था क्योंकि अनुभव होने और इसे रिपोर्ट करने के बीच समय का अन्तर था (इविंगहॉस ने अपने प्रयोग के माध्यम से यह प्रदर्शित किया कि अधिकांश भूलना अनुभव के तुरन्त बाद होता है, इसलिए यह अत्यधिक सम्भावना है कि कुछ अनुभव उस समय खो सकते हैं जब इसे आत्म-दर्शन के लिए सूचित किया गया था। इसका संरचनात्मक मनोवैज्ञानिकों ने दो आधारों पर आलोचकों को जवाब दिया, पहला उन्होंने निर्दिष्ट किया कि, इसके अनुभव और रिपोर्टिंग के बीच बहुत ही संक्षिप्त समयान्तराल था; और दूसरा उन्होंने प्रस्ताव दिया कि, प्राथमिक मानसिक छवि होती है, जो उनके अनुसार पर्यवेक्षक के रिपोर्ट करने तक उनके अनुभव को संरक्षित करके रखती है। यद्यपि यह सम्भव है कि अनुभव बदल जाये, जब हम आत्म-दर्शन की विधि द्वारा इसकी जांच कर रहे हों। उदाहरण के लिए, क्रोध की चेतन अवस्था को आत्मसात करना कठिन है। इसका कारण यह है कि संज्ञान में लेने की प्रक्रिया में अनुभव को इसके घटक तत्वों में तोड़ने की कोशिश की जाती है, तो हमारे क्रोध को गायब या कम किया जा सकता है। हालांकि, टिचनर ने अभी भी माना कि, निरन्तर अभ्यास और प्रयासों के साथ, उनके आत्मदर्शनकर्त्ता, अपने निरीक्षण के काम को चेतन रूप से इसे बदले बिना, करने में सक्षम होंगे।
- अचेतन मन की धारणा से अन्तर्निरीक्षण विधि की एक और आलोचना उत्पन्न हुई, जिसे सिगमंड फ्रॉयड ने 20वीं शताब्दी शुरुआती वर्षों में दिया था। यदि फ्रॉयड का दावा है, कि हमारे मानसिक कार्य-पद्धति का एक हिस्सा अचेतन है, ऐसा विश्वास किया जाता है, तब यह स्पष्ट है कि इसे आत्मदर्शन का प्रयोग कर देखा

नहीं जा सकता है। एक इतिहासकार ने लिखा हैः आत्मदर्शनात्मक विश्लेषण का आधार पर यह धारणा थी कि चेतन निरीक्षण के द्वारा मन के सभी कामकाज को समझ पाना सम्भव है। आत्मदर्शन मानसिक कामकाज की सम्पूर्ण तस्वीर नहीं दे सकता, जब तक मानव मन के प्रत्येक विचार और संवेग का निरीक्षण करना सम्भव हो सके। यदि हमारे मन का विशाल क्षेत्र एक हिमखंड की तरह शक्तिशाली रक्षात्मक अवरोधों के पीछे छिपा रहे, और चेतना हिमखंड के नोक की तरह हो, तब आत्मदर्शन अनिवार्य रूप से असफल होगा।

### 4.3.2 टिचनर तंत्र की अतिरिक्त आलोचनाएं

- संरचनावादी आंदोलन पर *कृत्रिम* और *अप्रजायी* होने का आरोप लगाया गया था, क्योंकि इसमें चेतन प्रक्रियाओं के तत्वों को संश्लेषित करने का प्रयास किया था। आलोचकों ने तर्क दिया कि प्राथमिक घटकों के योग या संयोजन द्वारा किसी अनुभव को पूरा करना संभव नहीं है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि अनुभव हमारे लिए एकीकृत रूप में आता है, न कि व्यक्तिगत संवेदनाओं, प्रतिभाओं या भावात्मक अवस्थाओं के रूप में। हम कृत्रिम रूप से इसका विश्लेषण करने के अपने प्रयास में कुछ चेतन अनुभव की अनिवार्य रूप से खो देते है। यह इस आधार पर था कि मनोवैज्ञानिको के एक समूह ने एक नये विचारधारा के एक नये सम्प्रदाय, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान को जन्म देने के लिए, संरचनात्मकता के खिलाफ अपना विद्रोह शुरू कर दिया था।
- मनोविज्ञान के संरचनावाद की परिभाषा की भी आलोचना की गयी थी। संरचनावादियों ने कई विशिष्ठताओं को बाहर करने का विकल्प चुना जो कि टिचनर के बाद के वर्षों के दौरान उभर रहे थे, क्योंकि ये मनोविज्ञान के उनके विचार में फिर नहीं थे। उदाहरण के लिए, टिचनर ने बाल मनोविज्ञान या पशु मनोविज्ञान को मनोविज्ञान के रूप में नहीं माना था। उनकी मनोविज्ञान की अवधारणा नये काम की सराहना और गले लगाने और क्षेत्र में तलाश की जा रही नई दिशाओं के लिए बहुत संकीर्ण थी। मनोविज्ञान ने टिचनर से जल्दी ही आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

## 4.4 संरचनावाद का योगदान

इन आलोचनाओं के बावजूद क्षेत्र में इसके योगदान के लिए संरचनावाद को भी उचित श्रेय दिया गया थाः

- उनकी *विषय-वस्तु, चेतन अनुभूति,* स्पष्ट रूप से परिभाषित थी।
- उनकी *शोध विधियां* विज्ञान की उच्चतम परम्पराओं में थी, क्योंकि वे *निरीक्षण, प्रयोग* और *माप* पर आधारित थे। अनुभव और विषय का अध्ययन करने के लिए आत्म-निरीक्षण को सबसे अनुभव वाले व्यक्ति द्वारा ही देखी जा सकती थी।
- यद्यपि संरचनावादियों के लक्ष्य और विषय-वस्तु अब महत्वपूर्ण नहीं है, *अंतर्निरीक्षण की विधि,* जिसमें आपको खुद के विचारों और संवेगों की जांच, अनुभवों पर आधारित मौखिक रिपोर्ट दे कर की जाती है'' की तरह परिभाषित किया जाता है, मनोविज्ञान के अधिकतर क्षेत्रों में किया जाता है। उदाहरण के लिए उस व्यक्ति से आत्म-रिपोर्ट का अनुरोध किया जाता है, जिसे असामान्य

अनुभव हुए हों जैसे अंतरिक्ष में जाने वाले व्यक्तियों के लिए भारहीनता का अनुभव। मनोभौतिकी में भी शोधकर्ता अभी अपने प्रयोज्याओं को यह रिपोर्ट करने के लिए कहते है कि क्या एक स्वर में दूसरे की तुलना में नरम या तेज आवाज है। इसके अलावा अभिवृत्ति मापनी और व्यक्तिगत परीक्षण या आविष्कारिका और रोगी से नैदानिक रिपोर्ट सभी प्रकृति मे आत्म-दार्शनात्मक होते हैं।

- *संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं* जैसे कि तर्कणा जो अंतर्निरीक्षण पर आधारित होती है मनोविज्ञान में आज सामान्य प्रयोग की जाती है, उदाहरण के लिए, औद्योगिक/संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक कंप्यूटर टर्मिनल के साथ अपनी बातचीत के बारे में कर्मचारियों से आत्म-निरीक्षण रिपोर्ट प्राप्त कर सकते हैं, जिसका उपयोग बाद में उपयोगकर्त्ता के अनुकूल कंप्यूटर घटक विकसित करने के लिए किया जा सकता है। ऐसी मौखिक रिपोर्ट जो व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होती है, आँकड़े प्राप्त करने के लिए विश्वसनीय रूप है।

- अंत में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान ने भी आत्म-दर्शन पर अधिक जोर दिया है, क्योंकि चेतन प्रक्रियाओं में इनकी रुचि पुनर्जीवित हुई। इसलिए, हम कह सकते हैं कि अंतर्निरीक्षण विधि समय की कसौटी पर खरी उतरी और जीवित रही, हालांकि बिल्कुल वैसे नहीं जैसे टिचनर ने इसकी परिकल्पना की थी।

- संरचनावाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि आलोचना के लक्ष्य के रूप में कार्य करता था। संरचनावाद मजबूत हुआ, रूढ़िवादी विचारों का सम्प्रदाय स्थापित हुआ, जिसे मनोविज्ञान में नये विकासशील आंदोलनों द्वारा लक्षित और आलोचित किया गया। इन नये दृष्टिकोणों ने संरचनावादी दृष्टिकोण के उनके प्रगतिशील सुधार कर बड़ी मात्रा में उनके अस्तित्व को बकाया कर दिया। मौजूदा प्रणालियों या विचारों का विरोध करके विज्ञान में ये प्रगति आयी। सादृश्यता में, टिचनर के संरचनावाद का सामना करने के लिए एक विचार के रूप में मनोविज्ञान भी अपनी कठिन प्रणाली की नाजुक सीमाओं से बहुत आगे निकल आया।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3**

1) अंतर्निरीक्षण के विरोध में पश्चावलोकन की आलोचना क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) संरचनावाद की परिभाषा की किस प्रकार आलोचना की गयी?

.....

.....

.....

.....

## 4.5 सारांश

अब जब हम इस इकाई के अंत में आ गये हैं, तो हम उन सभी प्रमुख बिंदुओं को सूचीबद्ध करते हैं जो हमने सीखे हैं :

- एडवर्ड टिचनर संरचनावाद के संस्थापक थे, संरचनावाद, मनोविज्ञान का एक व्यवस्थित सम्प्रदाय। वुण्ट के निर्देशन में अपने शोधकार्य को पूरा करने के बाद अपने गुरु के विचारों को आगे बढ़ाने का दावा किया।
- हेल्महोल्ज, फेकनर और वुण्ट को संरचनावाद का पूर्ववर्ती माना जाता है।
- संरचनावाद का लक्ष्यः चेतना के घटकों को मूल तत्वों के संदर्भ में वर्णन करना, ये मूल तत्व किस प्रकार संयोजित होते हैं ये वर्णन करना, और चेतना के तत्वों का तंत्रिका तंत्र के साथ सम्बन्ध की व्याख्या करना (यानि शारीरिक प्रक्रियाओं)।
- संरचनावादियों का एक मुख्य विषयवस्तु चेतन की सामग्री का अध्ययन करना था।
- टिचनर ने यांत्रिकी उपागम विधि का प्रयोग किया। उन्होंने अपनी अन्तदर्शन की विधि का वर्णन 'व्यवस्थित प्रयोगात्मक अंतर्निरीक्षण' पद का प्रयोग का किया इसे आसेवालड कुल्पे द्वारा दिया गया था।
- टिचनर ने मशीनी दृष्टिकोण का उपयोग किया, जिसके अनुसार मनुष्यों को मशीनों के रूप में देखा जाता है। यह दृश्य गैलीलियन-न्यूटनियन मॉडल से लिया गया था, जिसने प्रयोगशाला-प्रयोगों के संचालन हेतु टिचनर को अच्छी तरह से अनुकूल किया।
- टिचनर के अनुसार, चेतन अवस्थाओं में तीन प्राथमिक अवस्थाएं होती हैं- संवेदनाएं, प्रतिमाएं और भावात्मक अवस्थाएं।
- टिचनर द्वारा प्रयोग किये गये अंतर्निरीक्षण विधि के बारे में कई आलोचनाएं थी, इनमें से कुछ आलोचनाएं इस प्रकार थी कि अंतर्निरीक्षण को कोई विशिष्ठ परिभाषा नहीं है, इसमें शामिल प्रशिक्षण प्रक्रिया में दोष थे, और यह कि आत्म-दर्शन होने के बजाय, यह वास्तव में पश्चावलोकन था।
- संरचनावादी आंदोलन पर कृत्रिम और होने का आरोप लगाया गया था क्योंकि उन्होंने तत्वों में चेतन प्रक्रियाओं को संश्लेषित करने का प्रयास किया था। तर्क दिये गये थे कि इसमे प्राथमिक घटकों के योग या संयोजन के द्वारा किसी अनुभव को पूरा करना सम्भव नहीं है।
- संरचनावाद का एक मुख्य योगदान, अंतर्निरीक्षण की विधि है- ''किसी के खुद के विचारों और संवेगों को अनुभवों पर आधारित मौखिक रिपोर्ट देकर की गयी जांच'' इसे मनोविज्ञान के कई क्षेत्रों में उपयोग की जाती है।
- संरचनावाद एक मजबूत रूढ़िवादी सम्प्रदाय बनकर स्थापित हुआ, जिसे मनोविज्ञान में नये विकासशील आंदोलन द्वारा लक्षित और आलोचना की गयी है।

## 4.6 मुख्य शब्द

**संरचनावाद** : मनोविज्ञान का पहला स्कूल, एडवर्ड, ब्रेडफोर्ड टिचनर द्वारा स्थापित एक व्यवस्थित आंदोलन, जिन्होंने अपना शोधकार्य वुण्ट के अधीन पूरा करने बाद उनके मनोविज्ञान को आगे बढ़ाया। संरचनावाद का उद्देश्य चेतना को छोटे तत्वों में विभाजित करना और उनके संयोजन को समझना था।

**चेतना** : अंतर्निरीक्षण में शामिल है, सचेत अनुभवों को तत्वों के सिर्फ नाम की रिपोर्टिंग के बजाय, सचेत अनुभव के तत्वों का वर्णन करना।

**संवेदना** : प्रत्यक्षीकरण के मूल तत्व जो प्राकृतिक दुनिया में मौजूद भौतिक वस्तुओं से आने वाली गन्ध, दृश्य, आवाजें और दूसरे अनुभव हो सकते है।

**प्रतिमाये** : विचारों के तत्व जो प्रक्रिया में पाये जा सकते हैं जो पिछले अनुभवों को दर्शाते हैं अर्थात अनुभव जो वास्तव में वर्तमान में मौजूद नहीं है, उदाहरण के लिए, एक अतीत की घटना की स्मृति।

**भावात्मक स्थितियां** : संवेग के तत्व और ये उन अनुभवों जैसे प्यार, क्रोध, नफरत, खुशी, दुःख आदि में पाये जाते हैं।

## 4.7 पुनरावलोकन प्रश्न

1) ....., ..... और ..... को संरचनावाद का प्रतिपादक माना जाता है।
2) चेतना को तीन ....., ..... और ..... तत्व है।
3) टिचनर यांत्रिकी दृष्टिकोण के प्रयोग में ..... मॉडल से प्रभावित थे।
4) मन और चेनता के बीच क्या अंतर है?
5) संरचनावाद के अनुसार मनोविज्ञान की क्या परिभाषा है?
6) टिचनर द्वारा प्रयुक्त अंतर्निरीक्षण की विधि वुण्ट की विधि से कैसे अलग है?
7) चेतना के तत्वों का वर्णन करने के विभिन्न तरीकों का वर्णन कीजिए।
8) अंतर्निरीक्षण की विधि के विरुद्ध प्रमुख आलोचनाओं पर चर्चा कीजिए।
9) मनोविज्ञान में अन्य सम्प्रदायों और दृष्टिकोणों के विकास में संरचनावाद के सम्प्रदाय ने कैसे भूमिका निभाई।
10) मनोविज्ञान में अंतर्निरीक्षण की विधि को किस प्रकार प्रयोग किया जाता है।

## 4.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*, Harlow: Pearson Education Ltd.

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology,* Wadsworth: Cengage Learning.

Marx, M. H. & Hillix, W. A. (1963). *Systems and Theories in Psychology*, New York: McGraw-Hill.

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). *A History of Modern Psychology*, Wadsworth: Thomson Learning, Inc.

## 4.9 चित्रों के संदर्भ

Cherry, K. (2020). Edward B. Titchener and Structuralism. https://www.verywellmind. com/edward-b-titchener-biography-2795526

Hermann Ludwig Ferdinand von Helmholtz. https://en.wikipedia.org/wiki/Hermann_von_Helmholtz

Gustav Theodor Fechner https://en.wikipedia.org/wiki/Gustav_Fechner

Wilhelm Maximilian Wundt https://en.wikipedia.org/wiki/Wilhelm_Wundt

## 4.10 ऑनलाइन संसाधन

Cherry, K. (2020). Edward B. Titchener and Structuralism. https://www.verywellmind. com/edward-b-titchener-biography-2795526

Cherry, K. (2020). The Origins of Structuralism in Psychology. https://www.verywellmind. com/who-founded-structuralism-2795809

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Edward B. Titchener: American Psychologist. https://www.britannica.com/biography/Edward-B-Titchener

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Structuralism. https://www.britannica. com/science/structuralism-psychology

### पुनरावलोकन प्रश्नों के उत्तर (1-3)

1) हेल्महोल्ज, फेकनर, वुण्ट
2) संवेदनाएं, प्रतिमाएं, भावात्मक स्थितियां
3) गैलेलियन न्यूटोनियन मॉडल

# इकाई 5 प्रकार्यवाद*

संरचना


5.0 प्रस्तावना

5.1 प्रकार्यवाद के पूर्ववर्ती

5.1.1 चार्ल्स डार्विन

5.1.2 फ्रेंसिस गेल्टन

5.1.3 जॉर्ज रोमेन्स और सी लॉयड़ मॉर्गन

5.1.4 हरबर्ट स्पेंसर

5.1.5 विलियम जेम्स

5.2 प्रकार्यवाद की स्थापना

5.3 प्रकार्यवाद : शिकागो सम्प्रदाय

5.3.1 जॉन डेवी

5.3.2 जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल

5.3.3 हार्वे कार्र

5.4 प्रकार्यवाद : कोलम्बिया सम्प्रदाय

5.4.1 रॉबर्ट सेसन्स वुडवर्थ

5.5 प्रकार्यवाद की आलोचनाएँ

5.6 प्रकार्यवाद के योगदान

5.7 सारांश

5.8 मुख्य शब्द

5.9 पुनरावलोकन प्रश्न

5.10 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

5.11 चित्रों के संदर्भ

5.12 ऑनलाइन संसाधन


## सीखने के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न में सक्षम होंगे :

- मनोविज्ञान के प्रकार्य आंदोलन की गतिविधियों का वर्णन करने में;
- प्रकार्यवाद के कार्य-विषय की व्याख्या करने में;
- प्रकार्यवाद के विकास में जॉन डेवी, जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल, हार्वे कार्र तथा राबर्ट सेशन्स वुडवर्थ के योगदान; और
- मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रकार्यवाद का प्रमुख योगदान जानने में।


* डॉ. सैफ़ आर. फ़ारूकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

## 5.0 प्रस्तावना

मनोविज्ञान चिन्तन की वास्तव में प्रथम अमेरिकी विचारधारा है जिसके प्रकार्यवाद, विकास का श्रेय अमेरिका के सुप्रसिद्ध मनोविज्ञानी विलियम जेम्स को जाता है। उनसे पहले वाले प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिकों ने मस्तिष्क की संरचना अथवा संयोजन पर ध्यान नहीं दिया था। उन्होंने केवल उसकी कार्यप्रणाली का अध्ययन किया। प्रकार्यवादियों ने मस्तिष्क के विभिन्न कार्यों एवं कार्य-विधियों की व्याख्या की जो संसार में प्राणियों व्यक्ति के व्यवहारों के लिए उत्तरदायी होते हैं। उन्होंने अच्छी तरह समझा कि मानसिक प्रक्रियाएं जीवधारियों का मनुष्यों को पर्यावरण के अनुकूल बनाने में किस प्रकार सहयोग करती हैं।

वुण्ट और टिचनर, मानसिक प्रविधियों की इस संदर्भ में व्याख्या करने में असमर्थ रहे। उनका लक्ष्य ऐसा करना रहा भी नहीं। मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों का अध्ययन करते समय उनका परिप्रेक्ष्य शुद्ध वैज्ञानिक रहा, मन के व्यावहारिक पक्ष उनके अध्ययन के विषय नहीं रहे। संरचनात्मक मनोविज्ञान और व्यावहारिक मनोविज्ञान की कोख को प्रक्रियावाद जैसी नयी अवधारणा का जन्म हुआ। अपने मूल रूप में मनोविज्ञान की ये दोनों विचारधाराएं पहले बहुत सीमित महत्व वाली थीं। इनका अध्ययन प्रायः नहीं किया जाता था। अपनी उपेक्षा के कारण मनोविज्ञान की ये दोनों प्रणालियां प्रकार्यवादियों से जुड़े आवश्यक सवालों के जवाब तक नहीं दे पायी थीं।

प्रकार्यवादी ऐसे कुछ सवालों के जवाब तलाश रहे थे, जैसे - मन का क्या काम होता है? मन क्या करता है, तथा कैसे करता है? प्रकार्यवादी विशेष रूप से यह समझना चाहते थे कि व्यक्तियों तथा प्राणियों के व्यवहार और उनकी चेतना पर्यावरण के साथ अनुकूलता धारणा करने में उनकी सहायता किस प्रकार करते हैं। यही कारण था कि उन्होंने मानव-चेतना और व्यवहार के उपयोगी पक्ष पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उनके द्वारा मानसिक प्रक्रियाओं और व्यवहारों की प्रकार्यात्मकता के अध्ययन पर जोर देने के प्रयासों के परिणामस्वरूप प्रकार्यवादियों के सामने मनुष्य के रोजमर्रा की समस्याओं के हल निकालने तथा विभिन्न पर्यावरण परिस्थितियों के साथ अनुकूलन स्थापित करने की मानसिक क्षमताओं को समझाने का द्वार खुल गया।

इस प्रकार प्रकार्यवादियों के आंदोलन ने अमेरिका में व्यावहारिक मनोविज्ञान के तीव्र गति से विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रकार्यवादी स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि मनोविज्ञान का विशिष्ट आयाम प्रकार्यवाद, कभी भी अकेले उस प्रकार अपना अस्तित्व नहीं बनाये रख सकता था जिस प्रकार मनोविज्ञान के संरचनावादी आयाम ने बनाकर रखा था। विभिन्न प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान अस्तित्व में आये जो एक दूसरे से अलग थे, आज उनमें से बहुत से अस्तित्व में भी नहीं हैं। शिकागो की प्रकार्यवादी विचारधारा से जुड़े हार्वे कार्र नामक मनोवैज्ञानिक ने जब अवकाश ग्रहण किया, तब इसके साथ ही सभी प्रकार्यात्मक मनोवैज्ञानिक की सम्प्रदाय गायब हो गये।

प्रकार्यवाद मौजूदा परिप्रेक्ष्य का विरोधी नहीं था। जब प्रकार्यवाद को ऐसे मूल्यों और कार्य-पद्धतियों के रूप में समझा जाता है जो अनुकूलनशीलता तथा अनुभव पर कर्ता के संबंधों पर आधारित होते हैं तब इसका प्रभाव आज भी मनोविज्ञान पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

**बॉक्स 5.1 : मनोविज्ञान के प्रथम सम्प्रदाय संरचनावाद अथवा प्रकार्यवाद**

प्रकार्यवाद ने प्रायः संरचनावाद का विरोध किया और इसीलिए वह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा बन गयी। प्रकार्यवादी यह दावा करते हैं कि उनका विचार तब भी मौजूद था जब संरचनावाद अस्तित्व में नहीं आया था। प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, जब नये मनोविज्ञान का विकास हो रहा था तब प्रकार्यवादी मनोविज्ञान की नींव डाली जा रही थी। डार्विन, गैल्टन तथा प्राणियों के व्यवहार के अध्ययनकर्ताओं ने प्रकार्यवादी मनोविज्ञान की नींव डाली।

1859 में, डार्विन ने अपनी पुस्तक *आन द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज* प्रकाशित की, जो विकासवाद के अध्ययन में एक मील का पत्थर है। यह एक वर्ष पहले फेकनर ने *एलिमेंट्स ऑफ साइकोफिजिक्स* प्रकाशित की थी, 20 वर्ष पहले वुण्ट ने लीपजिग, जर्मनी में अपनी मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित किया था। 1869 से कुछ वर्ष पहले सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वुण्ट की किताब *प्रिंसिपल ऑफ फिजियोलॉजीकल साइकोलॉजी* प्रकाशित हुई थी (1873-74), गैल्टन ने व्यक्तियों के बीच पाई जाने वाली विभिन्नताओं पर काम किया था। 1880 के दशक में, जब टिचनर, वुण्ट के अधीन काम करने के लिए इंग्लैंड से जर्मनी आये थे, तब प्राणियों के व्यवहार पर अध्ययन का काम चल रहा था।

इस प्रकार प्राणियों के व्यवहारों में पाई जाने वाली विविधता, व्यक्ति अन्तर तथा चेतना के कार्यों पर बहुत काम हो चुका था। उसी समय वुण्ट और टिचनर ने मनोविज्ञान की व्याख्या की थी, परन्तु उसमें प्राणियों के व्यवहार पर किये जा रहे कार्य को शामिल नहीं किया था।

## 5.1 प्रकार्यवाद के पूर्ववर्ती

### 5.1.1 चार्ल्स डार्विन

चार्ल्स डार्विन के विकासवादी सिद्धांत ने मानव चेतना के संरचनात्मक तथा कार्यात्मक मनोविज्ञान को विशेषरूप से प्रभावित किया। एक ही प्रजाति के प्राणियों, मनुष्यों में विभिन्नता की चार्ल्स डार्विन ने व्याख्या करते हुए बताया कि मनुष्य-मनुष्य के बीच जो विविधताएं मौजूद होती हैं, उनका कारण मनुष्यों की आनुवंशिकता होती है। चार्ल्स डार्विन ने प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया को व्याख्या की और समझाया कि इस सृष्टि में केवल वही जिन्दा रहते हैं, जो पर्यावरण अथवा परिस्थितियों के अनुकूल अपने आपको ढाल पाते हैं तथा वे प्राणी जो अनुकूलन नहीं कर पाते प्रकृति की उसी प्रक्रिया द्वारा विलुप्त हो जाते हैं। चार्ल्स डार्विन ने विकासवाद और प्राकृतिक चयन की प्रक्रियाओं पर विशेष रूप से कार्य किया। अपने इसी कार्य के कारण चार्ल्स डार्विन के विचार प्रकार्यवाद के उद्‌भव व्यवहार और रूप विज्ञान का विशेषरूप से निरीक्षण किया। इसी के आधार पर घोषणा की, कि किस प्रकार विभिन्न स्तरों पर जानवरों की प्रजातियों से विकास करते हुए अंततः मनुष्य विकसित हुआ है। चार्ल्स डार्विन ने जानवरों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर अपने विकासवादी सिद्धान्त की व्याख्या की। चार्ल्स डार्विन का विकासवादी सिद्धांत अनुकूलन की प्रक्रिया पर विशेष जोर देता है इसलिए इसका उपयोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्यों की मानसिक संरचना और उनके व्यवहार का वर्णन करते समय मनोवैज्ञानिकों ने किया है। मनुष्यों की

नैसर्गिक प्रवृत्तियों तथा उनके प्रबलन के सिद्धान्तों को समझने में चार्ल्स डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त से विशेष रूप से सहायता मिली है।

### 5.1.2 फ्रांसिस गैल्टन

फ्रांसिस गैल्टन चार्ल्स डार्विन का पारिवारिक रिश्ते में भाई था। उन्होंने मनुष्यों की आनुवंशिकता का विशद अध्ययन किया। उन्होंने विशेष रूप से अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि बुद्धिमत्ता मनुष्यों को वंशानुगत प्राप्त होती है। 1869 में उसका शोध प्रबंध *हैरीडीटरी जीनियस* प्रकाशित हुई थी जिसमें मनुष्यों के बीच बौद्धिक स्तरों की विभिन्नताओं पर प्रकाश डाला गया। गैल्टन के शोध-कार्य ने मानसिक क्षमताओं के परीक्षण करने का रास्ता खोल दिया जो मनोविज्ञान का एक विशिष्ट आयाम है।

### 5.1.3 जॉर्ज रोमेन्स और थॉमस सी लॉयड़ मॉर्गन

रोमेन्स और मॉर्गन दोनों ने प्राणियों के व्यवहार पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। विभिन्न दृष्टिकोणों से तलाशा है। रोमेन्स ने चार्ल्स डार्विन के सिद्धान्त के आधार पर तुलनात्मक मनोविज्ञान का विकास किया। उनका एक शोध *एनीमल इंटैलीजैंस* (*Animal Intuigence*) 1883 में प्रकाशित हुआ। इस शोध में रोमेन्स ने प्रोटोजोआ से लेकर वन मानव तक विभिन्न प्रजातियों के प्राणियों की मानसिक क्षमताओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। मॉर्गन रोमेन्स की इस परिकल्पना से सहमत नहीं थे कि जानवरों में भी बुद्धिमत्ता होती है।

### 5.1.4 हरवर्ट स्पेन्सर

हरवर्ट स्पेन्सर समाजशास्त्र और सामाजिक मनोविज्ञान के विशेषज्ञ थे, उन्होंने विकासात्मक मनोविज्ञान का समग्रता के साथ वर्णन किया है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि व्यक्ति के जीवन में जो परिवर्तन सीखने से आते हैं, वे उन परिवर्तनों से बहुत मिलते-जुलते होते हैं, जो दूसरी प्रजातियों में चयन को आते हैं।

### 5.1.5 विलियम जेम्स

विलियम जेम्स महान मनोवैज्ञानिकों में से एक माने जाते हैं। जॉन डेवी ने उन्हें अमेरिका के सबसे महान मनोविज्ञानी की संज्ञा दी है। जॉन वाट्सन ने उन्हें दुनिया का सबसे बुद्धिमान मनोवैज्ञानिक बताया है। जेम्स ने मनोविज्ञान की औपचारिक प्रणाली की स्थापना नहीं की थी, और किसी को मनोविज्ञान का परीक्षण भी नहीं दिया था, परन्तु मनोविज्ञान के विकास में उनका योगदान विशेष रूप से प्रकार्यवादी विचारधारा के मामले में अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा सराहनीय है। प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में उनके विचारों ने अप्रत्यक्ष रूप से मनोविज्ञानियों की अगली पीढ़ियों को विशेषरूप से प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार उन्होंने प्रकार्यात्मक आंदोलन को आगे बढ़ाने में विशेषरूप से योगदान दिया है।

विलियम जेम्स की किताब *द प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी'* (1890), अंततः प्रकार्यवाद की केन्द्रीय सिद्धान्त बनी जिसके अनुसार मनोविज्ञान का उद्देश्य यह जानना है कि लोग पर्यावरण के साथ अनुकूलन किस प्रकार करते हैं। चेतना के तत्वों का विश्लेषण करना मनोविज्ञान का उद्देश्य नहीं है।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1**

1) प्रकार्यवादी संरचनावादियों से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) संरचनावादी प्रकार्यवादियों के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

## 5.2 प्रकार्यवाद की स्थापना

जो मनोवैज्ञानिक प्रकार्यवाद की स्थापना से जुड़े रहे अथवा जिन्होंने प्रकार्यवाद की नींव डाली, उनका उद्देश्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में किसी नई विचारधारा को जन्म देना नहीं था। यह सब लोग वुण्ट और टिचनर के संकीर्ण दृष्टिकोण से सहमत नहीं थे। वे प्रचलित मनोविज्ञान में संशोधन चाहते थे। यही कारण है कि प्रकार्यवाद ने मौजूदा मनोविज्ञान की विभिन्न विचारधाराओं में से किसी को आत्मसात् नहीं किया। प्रकार्यवादियों की नई विचारधारा के रूप में स्थापित करने में रुचि न होने के कारण प्रकार्यवाद ने अपने आपको रचनावाद की तरह कठोर नियमों में नहीं बांधा।

जहां टिचनर ने संरचनावादी मनोविज्ञान को स्थापित करने के लिए कठोर परिश्रम किया। वहीं प्रकार्यवादी मनोविज्ञान ने कभी अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयास नहीं किया। चेतना के कार्यों को समझने के प्रयास में विविध प्रकार्यात्मक मनोवैज्ञानिक विचारधाराएं एक ही समय में अस्तित्व में आईं। प्रकार्यवाद ने सदैव मानसिक गतिविधियों और मस्तिष्क के कार्यों पर जोर दिया, जिसकी वजह से जीवन की दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को सुलझाने के मामले में मनोविज्ञान का दखल बढ़ा। प्रकार्यवादियों ने विशेष रूप से यह समझने का प्रयास किया कि लोग विभिन्न पर्यावरणों के साथ अनुकूलन किस प्रकार स्थापित करते हैं। प्रकार्यवादियों के इन प्रयासों ने अमेरिका में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के विकास में विशेष योगदान दिया।

मजेदार बात यह है कि संरचनावाद के संस्थापक टिचनर ने अनजाने ही प्रकार्यवाद को आकार देने में मदद की। 1898 में अपने लेख *द पॉस्टूलेट्स ऑफ स्ट्रक्चरल साइकोलॉजी* में टिचनर ने संरचनावाद और प्रकार्यवाद में अंतर स्थापित करने का प्रयास किया। ऐसा करते समय उन्होंने यह साबित करने का प्रयास भी किया कि संरचनावाद प्रकार्यवाद से किस प्रकार बेहतर है।

टिचनर के इस प्रयास ने प्रकार्यवाद को संरचनावाद की विरोधी ताकत के रूप में स्थापित किया। ये टिचनर का प्रयास ही था जिसने प्रकार्यवाद को अपनी अलग पहचान बनाने और अपना अलग स्तर बनाने में सहायता की। टिचनर के प्रयास से पहले प्रकार्यवादियों का आन्दोलन नाम रहित था। टिचनर के विरोध ने इसे प्रकार्यवादी आन्दोलन के रूप में पहचान दी। इस प्रकार टिचनर ने संरचनावादी मनोवैज्ञानिक होते हुए भी प्रकार्यवाद की स्थापना और विकास में विशेष रूप से योगदान दिया।

## 5.3 प्रकार्यवादः शिकागो सम्प्रदाय

हालांकि इस नये सम्प्रदाय को प्रकार्यवाद का नाम टिचनर ने दिया था, फिर भी टिचनर को प्रकार्यवाद का पूरा श्रेय नहीं दिया जा सकता। जिन दो मनोवैज्ञानियों ने प्रकार्यवाद को आकार ग्रहण करने और उसके समुचित रूप में विकास करने में सीधा-सीधा योगदान दिया उनके नाम हैं – जॉन डेवी और जेम्स रोलैन्ड ऐंजिल। विलियम जैम्स का मानना था कि इन दो मनोवैज्ञानिकों को प्रकार्यवाद के संस्थापक के रूप में मनोविज्ञान के इतिहास में मान्यता दी जाए। इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के द्वारा स्थापित प्रकार्यवाद को शिकागो विचारधारा की संज्ञा भी विलियम जेम्स ने ही दी थी।

### 5.3.1 जॉन डेवी

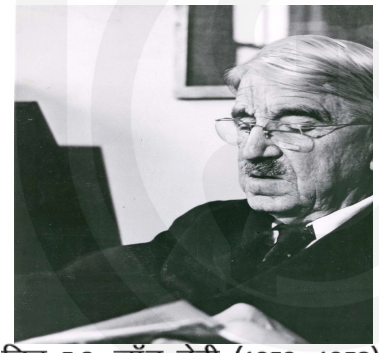

चित्र 5.2: जॉन डेवी (1859–1952)
स्रोत : www.britannica.com

**बॉक्स 5.2 : जॉन डेवी**

जॉन डेवी ने 1884 में जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय, बाल्टीमोर से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की थी। उन्होंने कान्ट के दर्शन पर शोध किया था। 1886 में *साइकोलॉजी* शीर्षक से उनकी किताब प्रकाशित हुई। अमेरिका में प्रकाशित मनोविज्ञान की यह पहली किताब थी। यह किताब अमेरिका तथा यूरोप के देशों में अत्यधिक लोकप्रिय हुई और इसके कारण मनोवैज्ञानिक के रूप में डेवी चर्चा में आ गये। इसके बाद 1890 में विलियम जेम्स की पुस्तक *द प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी* प्रकाशित हुई।

डेवी शिकागो विश्वविद्यालय में दस वर्षों तक रहे। इस बीच उन्होंने लेबोरेट्री स्कूल स्थापित किया जो शिक्षा के क्षेत्र में एक नया काम था। प्रगतिशील शिक्षा के क्षेत्र में इस स्कूल ने क्रांतिकारी काम किया। 1904 में, डेवी न्यूयॉर्क स्थित कोलम्बिया विश्वविद्यालय में चले गये। वहां वे व्यावहारिक मनोविज्ञान पर काम करते हैं। उनका काम प्रकार्यवादी मनोविज्ञान की स्थापना का मानक बना।

सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जॉन डेवी का लेख *द रिफलैक्स आर्क कंसैप्ट इन साइकलॉजी* 1896 में प्रकाशित हुआ। इस लेख ने प्रकार्यवादी आंदोलन को जन्म दिया। प्रतिवर्त धनु (Reflex Arc) संवेदी उद्दीपक (Sensory Stimuli) और पेशीय अनुक्रियाओं (Motor Responses) को जोड़ने का काम करता है। अपने शोध पत्र में डेवी ने वुण्ट और टिचनर के असामान्य व्यवहार तथा चेतना के अनुभवों को अलग-अलग बताने वाली धारणा की आलोचना की थी। उन्होंने इसे मनोवैज्ञानिक अणुवाद, मनोवैज्ञानिक तात्विकवाद तथा प्रतिवर्त धनु संबंधी कटौतीवाद की संज्ञा दी तथा उसका घोर विरोध किया। प्रतिवर्त धनु के समर्थकों ने तर्क दिया कि किसी भी मनुष्य का व्यवहार उसके मानसिक उत्प्रेरण तथा उसकी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया पर आधरित होता है। डेवी ने प्रस्तावित किया कि परावर्ती प्रतिक्रिया द्वारा निर्मित समझ धनु का निर्माण नहीं करती

अपितु वह वृत्त का आकार लेती है। इसके लिए बच्चे का अग्नि के साथ व्यवहार का उदाहरण दिया जाता है।

जैसे ही बच्चा जलती हुई आग की गर्मी महसूस करता है, वह अपना हाथ पीछे खींच लेता है। डेवी मानते थे कि पहले आग बच्चे को अपनी ओर आकर्षित करती है और वह आग की ओर बढ़ता है परंतु जैसे ही उसे यह आभास होता है कि उसे छूना हानिकारक होगा, उसके मन में आग के प्रति प्रत्याहार उत्पन्न होता है और वह अपना हाथ पीछे खींच लेता है। शुरू के दृष्टिकोण के अनुसार में बच्चा इससे आकर्षित होता है, अब बच्चा उसी आग से पीछे हटता है। इस प्रकार, उन्होंने तर्क दिया कि प्रत्यक्षण और गति को एक इकाई माना जाना चाहिए। डेवी तर्क देता है कि जिस प्रकार चेतना का अध्ययन आधारभूत तत्वों के रूप में नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार निजी व्यक्तित्व प्रतिक्रिया को ज्ञानेन्द्रिय के अलग-अलग तत्वों में विभाजित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के कृत्रिम एवं न्यूनीकरण विश्लेषण में लगाना व्यवहार को निरर्थक बनने का कारण है।

व्यवहार के इस तरह के विश्लेषण को डेवी स्वीकार नहीं करता। उसका मानना है कि जीव का हर व्यवहार पर्यावरण के साथ अनुकूलन पर आधारित होता है। मनोविज्ञान का विषय-वस्तु ही कुल मिलाकर पर्यावरण के प्रति जीव का अनुकूलन बन गया। विकासवादी परिप्रेक्ष्य ने डेवी के इन विचारों को प्रभावित किया कि मनोविज्ञान की विषय-वस्तु क्या है।

विकासवादी सिद्धांत इसी बात पर जोर देता है कि जीव पर्यावरण के साथ अपना अनुकूलन किस प्रकार करता है क्योंकि हर जीवधारी को जीवित और सुरक्षित रहने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है तथा चेतना और जीवधारी का व्यवहार दोनों ही अस्तित्व बनाए रखने में जीवधारी की सहायता करते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि एक प्रकार्यवादी जीवित रहने के लिए अनुकूलन को अनिवार्य मानता है। हालांकि, डेवी ने अपनी मनोवैज्ञानिक शाखा को प्रकार्यवाद का नाम कभी नहीं दिया, परंतु उन्होंने संरचनावादियों के व्यवहार और चेतना के बीच संबंध न होने वाले विचार का हमेशा विरोध किया।

संरचनावादी यह मानते हैं कि चेतना और व्यवहार दो अलग-अलग तत्व हैं। इसीलिए डेवी यह नहीं मानता है कि संरचना और कार्य दोनों का अध्ययन अलग-अलग नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार एक अन्य मनोवैज्ञानिक जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल ने संरचनावाद और प्रकार्यवाद को दो अलग-अलग ताकतें बताया है। डेवी का मनोविज्ञान के क्षेत्र में योगदान यह है कि उन्होंने अपना एक दार्शनिक ढांचा तैयार किया था, जिसके आधार पर अपनी नई पद्धति का विश्लेषण किया। अपने कार्य से डेवी ने आगे आने वाले मनोवैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं को प्रेरित एवं प्रभावित किया। 1904 में शिकागो विश्वविद्यालय से डेवी ने अवकाश ग्रहण कर लिया था। इसके आगे डेवी के काम को जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल ने संभाला और प्रकार्यवादी आन्दोलन का डेवी के बाद नेतृत्व किया।

## 5.3.2 जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल

चित्र 5.2 : जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल (1869–1949)
स्रोत :
www.britannica.com

**बॉक्स 5.3 : जेम्स रोलैण्ड़ ऐंजिल**

जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल ने मिशीगन में सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डेवी के अधीन स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। विलियम जेम्स की मनोविज्ञान पर लिखी गई पुस्तक *द प्रिन्सपल्स ऑफ साइकोलॉजी* से वे बहुत प्रभावित हुए। इस पुस्तक की प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा था, ''मुझे किसी अन्य पुस्तक ने कभी इतना प्रभावित नहीं किया''। जेम्स रोलैंड ऐंजिल को हॉर्वर्ड विश्वविद्यालय में विलियम जेम्स के अधीन एक वर्ष तक काम करने का अवसर मिला। 1892 में स्नातकोत्तर की परीक्षा उर्त्तीण करने के बाद आगे के अध्ययन के लिए ऐंजिल यूरोप की यात्रा पर रहे। उन्होंने बर्लिन (जर्मनी) में प्रोफेसर एबिंगहॉस तथा हेल्महोल्ज़ के व्याख्यान सुने।

सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वुण्ट के व्याख्यान सुनने के लिए वे लीपजिग गए। लेकिन उन्हें वुण्ट के व्याख्यान सुनने का अवसर नहीं मिल पाया क्योंकि वुण्ट किसी अन्य छात्र को और अधिक छात्रों को अपनी कक्षा में शामिल करने को तैयार नहीं हुए। ऐंजिल को हाले, जर्मनी में भी पीएचडी करने का अवसर नहीं मिला क्योंकि उनके सामने अपने शोध कार्य को जर्मन भाषा में लिखने की शर्त रख दी गई। इस शर्त को वे पूरा नहीं कर सकते थे क्योंकि जर्मनी में लगातार टिके रहने के लिए उनके पास आमदनी का कोई साधन नहीं था। वे पीएचडी तो नहीं कर सके परन्तु मिनसोटा विश्वविद्यालय में उन्हें शिक्षण कार्य का अवसर मिल गया।

ऐंजिल पीएचडी तो नहीं कर सके परंतु अपने जीवनकाल में पता नहीं कितने लोगों को पीएचडी की डिग्री देने का उन्हें श्रेय मिला। मनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्य करते हुए, बाद में उन्हें 23 मानद उपाधियों को प्राप्त करने का अवसर मिला। मिनसोटा विश्वविद्यालय में एक साल बिताने के बाद, ऐंजिल अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में चले गये और वहां उन्होंने अगले 25 वर्षों तक अपनी सेवाएं दीं।

1906 में ऐंजिल, अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष चुने गये। शिक्षण कार्य से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे बोर्ड ऑफ नेशनल ब्रॉडकॉस्टिंग कम्पनी के सदस्य बन गये।

जेम्स रोलैण्ड ने शिकागो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग शुरुआत की और मनोविज्ञान को सम्मानजनक स्थान दिलाया। उनके प्रयासों में विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रकार्यवादी क्षेत्र में अच्छा कार्य हुआ। 1904 में ऐंजिल की किताब *साइकोलॉजी* प्रकाशित हुई। इसमें ऐंजिल ने बताया है कि चेतना की भूमिका जीवधारी को पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने में किस प्रकार सहयोग प्रदान करती है, इसका अध्ययन करना मनोविज्ञान का मुख्य विषय है, अतः यह जानने का प्रयास किया जाना चाहिए कि मस्तिष्क इसमें मुख्य मदद किस प्रकार करता है।

इसके बाद 1906 में अमेरिका के मनोविज्ञान संघ के अध्यक्ष की हैसियत से दिये गये अपने भाषण में ऐंजिल ने कहा था- कि वे प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के क्षेत्र को विशेष रूप से बढ़ावा देना चाहते हैं। ऐंजिल ने तर्क दिया था कि मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रकार्यवाद कोई नया विचार नहीं है। यह मूलतः संरचनावाद का संशोधित एवं परिमार्जित कार्य स्वरूप ही है। प्रकार्यवादी आंदोलन के तीन सिद्धांतों की उन्होंने अपने भाषण में व्याख्या की। ये तीन सिद्धांत हैं–

1) जहां संरचनावाद मस्तिष्क की संरचना पर जोर देता है, वहीं प्रकार्यवाद मस्तिष्क के कार्यों की व्याख्या करता है। प्रकार्यवादी इस बात पर जोर देते हैं कि मस्तिष्क के कार्य क्या हैं और वह इन्हें विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार संपन्न करता है।

2) प्रकार्यवादी मनोविज्ञान; चेतना की कार्यात्मक भूमिका का मनोविज्ञान है। यह मनोविज्ञान चेतना को कार्यों के रूप में, उसके व्यावहारिक उपयोगिता के रूप में देखता है। कोई जीवधारी पर्यावरण की विभिन्न परिस्थितियों में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार करता है इसका अध्ययन प्रकार्यवादी मनोविज्ञान करता है। ऐंजिल ने यह तर्क दिया, क्योंकि चेतना सदैव अस्तित्व में रहती है, इससे जीवधारी के कार्यों में चेतना की भूमिका के महत्व को समझा जा सकता है। प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिकों से यह उम्मीद की जाती है कि वे इस बात का पता लगाएं कि यह कार्य चेतना के संदर्भ में क्या महत्व रखता है और विशिष्ट ज्ञान पद्धति के संदर्भ में क्या महत्व रखता है।

3) प्रकार्यवादी मनोविज्ञान में मनोभौतिक (मन–शरीर) संबंध शामिल है। यह जीवधारी और उसके पर्यावरण से संबंधों की व्याख्या करता है। परिणामस्वरूप प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिक मन और शरीर में भेद नहीं करते। इसके विपरीत वह यह मानकर चलते हैं कि मन और शरीर दोनों एक ही तर्कसंगत सिलसिले के अधीन कार्य करते हैं।

### 5.3.3 हार्वे कार्र

**बॉक्स 5.4 : हार्वे कार्ट**

हार्वे कार्र ने डेपाउ विश्वविद्यालय, इंडियाना (DePauw University Indiana) तथा कोलोराडो विश्वविद्यालय (University of Colorado) में गणित का अध्ययन किया था। बाद में मनोविज्ञान का अध्ययन में उन्हें रुचि उत्पन्न हुई और उसका कारण यह था कि वे कोलोराडो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर के व्यक्तित्व व विचारों से प्रभावित हुए थे। वे अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में चले गये और वहां उन्होंने प्रायोगिक मनोविज्ञान में प्रवेश ले लिया। यहां उन्हें प्रोफेसर जेम्स रोलैंण्ड ऐंजिल से मनोविज्ञान पढ़ने का अवसर मिला।

शिकागो विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते समय दूसरे वर्ष में उन्होंने प्रयोगशाला सहायक के रूप में नौकरी ले ली। हार्वे कार्ट को प्रोफेसर जॉन वाटसन के साथ काम करने का अवसर मिला, जो उस समय वहां शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे थे, बाद में जॉन वाटसन व्यवहारवाद के संस्थापक बने। हार्वे कार्र को प्राणी मनोविज्ञान का परिचय वाटसन ने ही कराया था। हार्वे कार्ट ने 1905 में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की और बाद में टैक्सास तथा मिशीगन विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। 1908 में वे शिकागो विश्वविद्यालय लौटे जहां उन्होंने जॉन वाटसन का स्थान प्राप्त किया। जॉन वाट्सन तब जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में चले गये थे। बाद में वे जेम्स रोलैंण्ड ऐंजिल के स्थान पर शिकागो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग के प्रमुख बने।

**चित्र 5.3: हार्वे कार्र**
**स्रोत :** www.jstor.com

हार्वे कार्र ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में उस समय चर्चा में आये जब प्रकार्यवाद एक अलग विचारधारा के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुका था। उसे अब संरचनावाद का

विरोधी मात्र नहीं समझा जाता था। उन्होंने ऐंजिल द्वारा स्थापित किये गये सिद्धांतों को उजागर करने की प्रक्रिया पर कार्य किया। हार्वे कार्र की देखरेख में शिकागो विश्वविद्यालय में प्रकार्यवाद ने अधिकतम बढ़त हासिल की और मनोविज्ञान की एक स्थापित विचारधारा के रूप में स्थान प्राप्त किया। अन्य समकालीन धाराएं जो मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश कर रही थीं जैसे- व्यवहारवाद, गेस्टालट मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण, इन सबको हार्वे कार्र ने धीरे-धीरे मनोविज्ञान के क्षेत्र में विकसित किया। हार्वे कार्र का विश्वास था कि ये मनोविज्ञान के क्षेत्र में विकसित होने वाली, नवीन धारायें प्रकार्यवाद में बहुत कुछ जोड़ेंगी। हार्वे कार्र का यह विचार मनोविज्ञान के प्रति उनके व्यापक दृष्टिकोण का परिचालक है। उन्होंने अमेरिकन मनोविज्ञान के रूप में प्रकार्यवादी मनोविज्ञान में अपना विश्वास प्रदर्शित किया।

आगे चलकर हार्वे कार्र ने प्रकार्यवाद की व्याख्या करने तथा उसको और अधिक परिष्कृत रूप प्रदान करने की दृष्टि से 1925 में *साइकोलॉजी* नामक एक किताब लिखी। अपनी इस किताब में उन्होंने दो तथ्यों पर विशेष रूप से जोर दिया है।

1) मानसिक गतिविधियां– जैसे स्मृति, प्रत्यक्षण, निर्णय क्षमता आदि को मनोविज्ञान के विषयों में शामिल करना।

2) इन सभी मानसिक गतिविधियों का काम अनुभवों को अर्जित करना, बनाए रखना, व्यवस्थित करना तथा उनका मूल्यांकन करना और उसके बाद उन्हें व्यक्ति के कार्यों को निर्देशित करने के लिए उपयोग करना। वे विशिष्ट कार्य जिनमें मानसिक गतिविधियों का इस्तेमाल होता है, उन्हें हार्वे कार्र ने दो भागों में बांटा है– 'अनुकूली' या 'समायोजन' (adaptive or adjustive) व्यवहार।

इस प्रकार हार्वे कार्र ने अपने समय के अन्य प्रकार्यवादियों की तरह मानसिक प्रक्रियाओं को चेतना की संरचना तथा प्रक्रिया पर ज्यादा जोर दिया। इसके बाद उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मानसिक प्रक्रियाओं से क्या-क्या जुड़ा है और वे उसे किस प्रकार पूरा करते हैं। 1925 तक आते-आते हार्वे कार्र के विचारों पर विवाद समाप्त हो गये और मनोविज्ञान के क्षेत्र में तथ्यों के रूप में उन्हें स्वीकृति मिल गई। इसके साथ ही प्रकार्यवादी मनोविज्ञान की मुख्यधारा में शामिल हो गया और अनेक मनोवैज्ञानिक अपने आपको प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिक कहलाने में गर्व का अनुभव करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रकार्यवाद का स्तर अपना महत्व खोने लगे और फिर हर मनोवैज्ञानिक अपने आपको केवल मनोवैज्ञानिक के रूप में कहलाया जाना पसंद करता था। प्रकार्यवादी के रूप में पहचान बनाए रखने की आवश्यकता अब किसी मनोवैज्ञानिक को नहीं रही।

जहां तक पद्धति का सवाल है, हार्वे कार्र ने दोनों पद्धतियां अपनाई हुई थीं- आत्मविश्लेषण की पद्धति तथा प्रयोगात्मक पद्धति। वुण्ट की तरह, हार्वे कार्र का भी विश्वास था कि मनुष्य की मानसिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए उसकी सांस्कृतिक रचनाएँ को समझना जरूरी है। संरचनावाद के विपरीत प्रकार्यवाद किसी एक पद्धति तक सीमित नहीं था। फिर भी प्रकार्यवाद का जोर वस्तुनिष्ठा पर अधिक था। प्रकार्यवादी जानवरों तथा मनुष्यों से प्राप्त सूचना को इकट्ठा करते थे।

प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के अध्ययन में कभी मनुष्य के मस्तिष्क तथा उसकी चेतना के व्यक्तिपरक अध्ययन पर जोर दिया और कभी उसके व्यवहार से जुड़े वस्तुपरक अध्ययन पर। उन्होंने अमरिकी मनोविज्ञान को इस सीमा तक पुनर्परिभाषित किया कि

वह अंततः प्रत्यक्ष व्यवहार पर ही केंद्रित हो गई और व्यक्तिपरक अवधारणा जैसे मस्तिष्क से जुड़ी चीजों के अध्ययन से अलग हट गई। इस प्रकार प्रकार्यवाद ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक नया आयाम खोज निकाला, जो वाटसन के व्यवहार मूलक मनोविज्ञान के उदय का आधार बना।

## 5.4 प्रकार्यवाद : कोलम्बिया सम्प्रदाय

### 5.4.1 रॉबर्ट सेसन्स वुडवर्थ

जब शिकागो विश्वविद्यालय में प्रकार्यवाद की नींव रखी जा रही थी और उस पर काम किया जा रहा था, तब रॉबर्ट वुडवर्थ ने प्रकार्यवाद के दूसरे आयाम का कोलम्बिया विश्वविद्यालय में विकास किया। वूडवर्थ इस पक्ष में नहीं थे कि किसी विशेष अवधारणा तक ही अपने आपको सीमित रखा जाए। ऐंजिल और हार्वे कार्र के ठीक विपरीत, वुडवर्थ प्रकार्यवादी विचारधारा से जुड़ा नहीं थे, परन्तु उन्होंने प्रकार्यवाद को आगे ले जाने के लिए विशेषरूप से कार्य किया। उन्होंने प्रकार्यवाद के गत्यात्मकता प्रदान की।

**बॉक्स 5.5 : रॉबर्ट सेसन्स वुडवर्थ**

रॉबर्ट सेसन्स वुडवर्थ एक वैज्ञानिक तथा गणित के शिक्षक थे। जब उन्होंने अमेरीकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के संस्थापक व अध्यक्ष ग्रैनविले स्टेनली हॉल का भाषण सुना और विलियम जेम्स की पुस्तक *प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी* पढ़ी, तो उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे मनोवैज्ञानिक बनेंगे। उन्होंने हार्वड विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की और 1899 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में जेम्स मेकिन केटेल के अधीन पीएचडी की डिग्री प्राप्त की।

1918 में उनकी पुस्तक *डायनामिक साइकोलॉजी* प्रकाशित हुई, 1921 में *साइकोलॉजी*, 1938 में *एक्सपेरीमेंटल साइकोलॉजी* तथा 1958 में '*डायनामिक विहेवियर* नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। 1956 में मनोविज्ञान में उनके विशेष योगदान के लिए उन्हें अमेरिकन साइकोलॉजीकल फाउंडेशन से गोल्ड मेडल मिला।

चित्र 5.4: रॉबर्ट सेसन्स वुडवर्थ
स्रोत :
www.psicologiaymente.com

वुडवर्थ यह नहीं मानते थे कि उन्होंने मनोविज्ञान में अपने विचारों से कुछ नया जोड़ा है। उसका कहना था कि एक अच्छे मनोवैज्ञानिक, मनोविज्ञान की बेहतरी के लिए तब भी काम करता था, जब यह विषय एक विज्ञान के रूप में विकसित नहीं हुआ था। उनका दृष्टिकोण अपने समय की किसी भी मनोवैज्ञानिक धारणा का विरोध करना तनिक भी नहीं था। जो कार्य दूसरे मनोवैज्ञानिकों ने किये थे, उन्हें संशोधित एवं परिमार्जित करने में उनकी अधिक रुचि थी। वुडवर्थ की यह मान्यता थी कि जीवन में घटने वाली घटनाओं का निरीक्षण तथा अध्ययन वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक ढंग से किया जाना चाहिए। मनुष्यों के व्यवहार उत्प्रेरणा वे प्रतिक्रियाओं के परिणाम होते है। किसी व्यवहार के पीछे की परिस्थितियों व कारणों को समय बिना उस पर मनोवैज्ञानिक अपनी राय कायम करेंगे तो समस्या उत्पन्न होगी। यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य एक जीवित प्राणी है। उसके अंदर ही कुछ चलता है। ये चीजें भी उसे हर समय प्रभावित करती रहती है। इन प्रभावों को केन्द्र में रखे बिना किसी के व्यवहार का सही मूल्यांकन संभव नहीं। हर प्राणी का ऊर्जा स्तर अलग होता है, उसके भूत और वर्तमान के अलग-अलग अनुभव होते हैं ये सभी घटक व्यक्ति के

व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इसी आधार पर वुडवर्थ यह मानते थे कि व्यक्ति उत्प्रेरण एवं अनुक्रिया के बीच फंसा होता है इसीलिए वह मानते थे कि मनोविज्ञान के अध्ययन विषय चेतना और व्यवहार दोनों होने चाहिए। बाद के मानवतावादी तथा सामाजिक अध्ययनकर्ताओं ने इस सत्य को स्वीकार किया।

बाहर से देखकर यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि व्यक्ति के अंदर क्या चल रहा है। तथ्यों की जानकारी के लिए आत्म-निरीक्षण को आधार बनाकर चलना तथ्य संकलन का सही तरीका है। प्रेक्षणात्मक तथा प्रयोगात्मक विधियों के संयोजन में अंतर्निरीक्षण की पद्धति का उपयोग किया गया था। जॉन डेवी तथा विलियम जेम्स दोनों मनोवैज्ञानिकों के कार्यों की समीक्षा करते समय तथा उनके कार्यों को आगे बढ़ाते समय वुडवर्थ ने गत्यात्मक मनोविज्ञान का प्रकार्यवाद में शुरू किया। इस संदर्भ में 'गत्यात्मक' शब्द का उपयोग डेवी और जेम्स ने भी 1883 और 1908 में किया था। गत्यात्मक मनोविज्ञान प्रमुख रूप से अभिप्रेरण पर जोर दिया। किसी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करते समय वुडवर्थ के अनुसार, व्यक्ति की मानसिक स्थितियों को ध्यान में रखना एक मनोवैज्ञानिक के लिए परम आवश्यक है। इसीलिए वह यह मानकर चलते थे कि मनुष्य के किसी खास ढंग का व्यवहार करने के पीछे जो अंतः शक्तियां काम करती हैं, उनकी समझ रखना आवश्यक है। क्योंकि ये शक्तियां ही अप्रत्यक्ष रूप से व्यवहार के लिए उत्तरदायी होती हैं इसीलिए वह यह मानते थे कि मनोविज्ञान का उद्देश्य यह पता लगाना होना चाहिए कि लोग ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2**

1) डेवी और ऐंजिल ने प्रकार्यवाद के विषय की व्याख्या किस प्रकार की है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) वुडवर्थ के कौन से विचार को सामाजिक सीखना तथा मानवतावादी सिद्धांतकारों द्वारा स्वीकार किये गये?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

## 5.5 प्रकार्यवाद की आलोचनाएँ

प्रकार्यवाद का सबसे ज्यादा विरोध संरचनावादियों द्वारा किया गया। इन दोनों मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं के अनुयायिओं के बीच इतना तीव्र विरोध हुआ कि इसके कारण अमरीकी मनोविज्ञान दो में विभाजित हो गए। टिचनर के संरचनावाद तथा शिकागो के प्रकार्यवाद।

प्रकार्यवाद की सबसे अधिक आलोचना इस बात को लेकर हुई कि 'प्रकार्यवाद' शब्द को ठीक से परिभाषित नहीं किया गया। टिचनर के एक शिष्य, रुकमिक ने *फंक्शन* (*function*) शब्द को अपनी मनोविज्ञान की 15 परिचयात्मक पुस्तकों में प्रयोग किया। फंक्शन शब्द का इस्तेमाल प्रायः दो अर्थों में किया जा सकता है- क्रिया अथवा पद्धति और दूसरी पद्धतियों की सेवा के लिए अथवा पूरे जीवधारी के लिए।

पहले उदाहरण में 'फंक्शन', 'गतिविधि' शब्द का पर्यायवाची है। उदाहरण के लिए याद करने अथवा समझने के कार्य 'फंक्शन' कहे जा सकते हैं। दूसरे उदाहरण में 'फंक्शन' शब्द का प्रयोग प्राणी के लिए किये गये किसी कार्य की उपयोगिता की व्याख्या करता है, जैसे- भोजन को पचाना एक कार्य है (पाचन तंत्र का कार्य)।

इन निष्कर्षों के आधार पर रुकमिक ने प्रकार्यवादियों पर इस बात के लिए विरोध किया कि उन्होंने 'फंक्शन' शब्द को द्विअर्थक रखा जिसके कारण उसके उपयोग में असंगति बनी रही। इस आलोचना के 17 वर्ष बाद 1930 में हार्वे कार्र ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा - दोनों उदाहरणों में एक ही पद्धति के बारे में कहा गया है। इसलिए दोनों परिभाषाएं विसंगत नहीं हैं।

कार्र ने अपनी प्रतिक्रिया के समर्थन में तर्क देते हुए कहा कि प्रकार्यवादी किसी प्रक्रिया विशेष का अध्ययन उससे परिभाषित करने के उद्देश्य से नहीं करते (परिभाषा 1), परन्तु उस क्रिया के अन्य क्रियाओं से संबंधों को केन्द्र में रखकर परिभाषित करने के लिए भी करते हैं (परिभाषा 2)। जीव विज्ञानी भी अपने अध्ययन के क्षेत्र में यही पद्धति अपनाते हैं। प्रकार्यवादियों ने अवधारणा का उपयोग पहले किया और उसकी व्याख्या बाद में की और घटनाओं का यह क्रम प्रकार्यवादी आंदोलन की विशेषता रहा।

दूसरी बड़ी आलोचना टिचनर की तरफ से आई। टिचनर के अलावा अन्य संरचनावादियों ने भी प्रकार्यवादियों की परिभाषा की आलोचना की। उन्होंने दावा किया कि प्रकार्यवादी अपने अध्ययन विषय तथा अपने द्वारा निर्धारित पद्धतियों पर कायम नहीं रहते। इसलिए उनके द्वारा प्रतिपादित प्रकार्यवाद को मनोविज्ञान नहीं माना जा सकता। यह तर्क दूर तक गया। टिचनर के विचार से यदि कोई विज्ञान अंतर्निरीक्षण अथवा आत्म-विश्लेषण द्वारा मन/मस्तिष्क तथा उससे जुड़े घटकों का अध्ययन नहीं करता तो उसे मनोविज्ञान नहीं माना जा सकता।

मूल मनोविज्ञान बनाम अनुप्रयक्त मनोविज्ञान का वाद-विवाद, आलोचना का अनुगमन करते हुए दूसरे आलोचकों ने टिप्पणी की है कि प्रकार्यवादी मनोविज्ञान व इसके सिद्धांतों को लागू करने में रुचि रखते है। सांसारिक कार्यों को संरचनावादी प्रत्येक दिन में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं के लिए पूरा मनोवैज्ञानिक ज्ञान को लागू करने के विचार के प्रतिरोधी थे। प्रकार्यवादी हालांकि खेदहीन बने रहे और उन्होंने शुद्ध विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान के विकास में कोई रुचि नहीं दिखाई।

हार्वे कार्र यह मानते थे कि शुद्ध मनोविज्ञान तथा व्यावहारिक मनोविज्ञान दोनों ही अनुभवगम्य कार्य विधियों को आत्मसात कर सकते हैं। ये दोनों ही मनोविज्ञान के आयाम हैं तथा दोनों आयामों में कक्षाओं से लेकर प्रयोगशालाओं तक, कारखानों से लेकर कार्यालयों तक सार्थक अनुसंधानों की संभावनाएं मौजूद हैं। अनुसंधान के लिए अध्ययन विषय से कहीं ज्यादा महत्व अध्ययन पद्धति का होता है।

शुद्ध मनोविज्ञान बनाम अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान की बहस उन दिनों ज्यादा महत्व रखती है, अब वह इतनी प्रासंगिक नहीं रही है यह इसलिए कि अब व्यावहारिक मनोविज्ञान का चलन व्यावहारिक हर जगह हो गया है और मनोवैज्ञानिक सिद्धांत, व्यावहारिक कारणों से हर स्थितियों में लगाये जा रहे है। दिन-प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए, व्यावहारिक मनोविज्ञान की उपयोगिता ने प्रकार्यवादी आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

## 5.6 प्रकार्यवाद के योगदान

संरचनावाद तथा उसके मौलिक सिद्धांतों का विरोध करके प्रकार्यवाद ने चेतना की जैविक संरचना के स्थान पर चेतना के कार्यों को मनोविज्ञान के अध्ययन के केन्द्र में ला खड़ा किया। दूसरा योगदान प्रकार्यवाद का यह है कि उन्होंने मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों में जानवरों का अध्ययन भी समावेशित कर लिया। इतना ही नहीं जानवरों के साथ-साथ प्रकार्यवादियों ने अबोध बच्चों तथा मानसिक अशक्त व्यक्तियों के अध्ययन को भी मनोविज्ञान के अंतर्गत ला दिया। मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों की पद्धतियों के दायरों को भी प्रकार्यवाद ने बढ़ा दिया। संरचनावादियों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले आत्म-निरीक्षण के तरीकों के अलावा प्रकार्यवादियों ने मनोवैज्ञानिक मानदण्डों, मानसिक परीक्षणों, साक्षात्कारों तथा व्यवहार की वस्तुपरक व्याख्याओं को भी मनोविज्ञान के अध्ययन के केन्द्र में ला दिया।

1920 में वुण्ट का निधन हो गया तथा 1927 में टिचनर का भी निधन हो गया। इन मनोवैज्ञानिकों के चले जाने के बाद प्रयोगात्मक और संरचनात्मक मनोविज्ञान को प्रक्रियावाद ने अमेरिका को पीछे धकेल दिया। प्रकार्यवाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं तथा सिद्धांतों का व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने के मामले में था।

**अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3**

1) संरचनावादियों की प्रकार्यवादियों द्वारा आलोचना किये जाने के बाद किस प्रकार शुद्ध मनोविज्ञान तथा अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान के बीच बहस छिड़ गई थी?

.....

.....

.....

2) 'प्रकार्यवाद' ने मनोविज्ञान के क्षेत्र का किस प्रकार विस्तार किया है?

.....

.....

.....

## 5.7 सारांश

टब जब हम इस इकाई के अंत में आ गए हैं तो हम उन सभी बिन्दुओं को सूचीबद्ध करेंगे जो हमने अब तक सीखे हैं :

- प्रकार्यवाद का श्रेय अमेरिका के सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स को जाता है। प्रकार्यवाद मनोविज्ञान की दूसरी महत्वपूर्ण विचारधारा है तथा सही अर्थों में मनोविज्ञान की पहली अमेरिकी विचारधारा है।
- संरचना अथवा संयोजन के स्थान पर प्रकार्यवाद ने मस्तिष्क के कार्यों पर विशेष रूप से जोर दिया। इसका अर्थ यह है कि प्रकार्यवाद मस्तिष्क द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले विभिन्न कार्यों तथा कार्य-पद्धतियों पर विशेष रूप से जोर देता है जिनका व्यक्ति के सांसारिक कार्यो पर प्रभाव पड़ता है तथा जो व्यक्ति को पर्यावरण के साथ अनुकूलन में सहायता करती हैं।
- प्रकार्यवादियों की रुचि इस सत्य का बोध करने में थी कि व्यक्तियों के व्यवहार और उनके परिणाम पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में उनकी किस प्रकार से सहायता करते हैं।
- चार्ल्स डार्विन, फ्रांसिस गैल्टन, जॉर्ज रोमैन्स, थॉमस मॉर्गन, हरबर्ट स्पैन्सर, और विलियम जेम्स आदि मनोवैज्ञानिकों ने प्रकार्यवाद की पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- विलियम जेम्स प्रकार्यवाद के केवल संस्थापक ही नहीं थे, बल्कि वे ही ऐसे व्यक्ति थे जिनके विचारों ने प्रकार्यवादी आंदोलन को जन्म दिया।
- विलियम जेम्स की किताब *'द प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी* (1890)। अंततः प्रकार्यवाद का केन्द्रीय सिद्धान्त बनी। जिसके अनुसार मनोविज्ञान का उद्देश्य इस सत्य का अध्ययन करना है कि मनुष्य पर्यावरण के साथ अनुकूलन किस प्रकार करता है। चेतना का तात्विक विश्लेषण करना प्रकार्यवाद का उद्देश्य नहीं है।
- संरचनावाद के संस्थापक टिचनर ने मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद को आकार देने में सहयोग दिया। 1898 में प्रकाशित अपने लेख *'द पोश्चुलेट्स ऑफ ए स्ट्रक्चरल साइकोलॉजी* में टिचनर ने संरचनावाद और प्रकार्यवाद के बीच अंतर स्थापित करने का प्रयास किया है।
- जॉन डेवी और जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल ने 'प्रकार्यवाद के विकास में योगदान दिया। प्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने जॉन डेवी और जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल को प्रकार्यवाद का संस्थापक बताया है तथा उनके इन प्रयासों से मनोविज्ञान की जो शाखा विकसित हुईं उसे शिकागो सम्प्रदाय नाम दिया है।
- प्रकार्यवाद की व्याख्या सबसे पहले जॉन डेवी ने अपने लेख *'द रिफ्लैक्स आर्क कंसैप्ट इन साइकोलॉजी* में की थी। इसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण 1896 में प्रकाशित हुआ। इस लेखन प्रकार्यवादी आंदोलन को प्रोत्साहन दिया। रिफ्लैक्स आर्क संवेदी उत्तेजना तथा प्रेरक तंत्रिका की अनुक्रिया के बीच संयोजन का उल्लेख करता है।
- 1904 में ऐंजिल की किताब *साइकोलॉजी* प्रकाशित हुई। इस किताब में ऐंजिल ने स्पष्ट किया कि चेतना किस प्रकार अनुकूलन में जीवधारी की सहायता करती है,

इसका अध्ययन करना मनोविज्ञान का उद्देश्य है। अंतः मनोविज्ञान का विषय इस सत्य का उद्घाटन करना होना चाहिए कि मस्तिष्क अनुकूलन की प्रक्रिया में किस प्रकार मददगार होता है।

- हार्वे कार्र के नेतृत्व में शिकागो विश्वविद्यालय में प्रकार्यवाद ने उल्लेखनीय बढ़त हासिल की और मनोविज्ञान के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में अपनी पहचान बनाई। उसी समय मनोविज्ञान की अन्य समकालीन सम्प्रदाय व्यवहारवाद, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान तथा मनोविश्लेषण आदि जन्म ले रही थीं। इन्हें कार्र ने मनोविज्ञान के सीमित आयामों के रूप में स्वीकार किया।
- हार्वे कार्र ने चेतना के तत्वों तथा अवयवों की तुलना में मानसिक कार्य-पद्धतियों को अधिक महत्व दिया। इसके अलावा उन्होंने, इन मानसिक पद्धतियों से जुड़े और इनके द्वारा संपन्न किये जाने वाले कोर्स की व्याख्या की। 1925 तक मनोविज्ञान के क्षेत्र में ये सभी निष्कर्ष स्वीकृति प्राप्त कर चुके थे।
- रोबर्ट सेसन्स वुडवर्थ ने कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रकार्यवाद के अन्य आयाम की स्थापना की।
- वुडवर्थ मानते थे कि हर प्राणी उत्प्रेरणा व अनुक्रिया के बीच फँसा होता है। इसीलिए वह विश्वास करता था कि मनोविज्ञान के अध्ययन विषय में चेतना व व्यवहार दोनों को शामिल किया जाना चाहिए। यह इस अवधारणा को आगे चलकर मानवतावादियों तथा सामाजिक मामलों का अध्ययन करने वाले सिद्धांतवादियों ने स्वीकार किया।
- वुडवर्थ ने गत्यात्मक मनोविज्ञान के सिद्धांत को प्रकार्यवाद पर लागू किया। गत्यात्मक मनोविज्ञान मूल्य रूप से अभिप्रेरणा पर जोर देता है। उसका तर्क था कि मनोविज्ञान का उद्देश्य इस बात का पता लगाया जाना होना चाहिए कि मनुष्य कोई व्यवहार क्यों करते हैं।
- व्यवहारवाद का मौलिक आलोचना इस बात के लिए खासतौर से की जाती है कि उसकी ठीक से व्याख्या नहीं की जा सकी। टिचनर के शिष्य रुकमिक ने पता लगाया था कि *फंक्शन* शब्द का उपयोग क्रिया अथवा पद्धति के लिए किया जाता है तथा अन्य पद्धतियों के लिए सेवा के रूप में या जीवधारी की समग्रतता के लिए किया जाता है।
- मूल बनाम अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान के बीच छिड़ी बहस में समालोचना प्रकार्यवादियों की व्यावहारिक मनोविज्ञान में रुचि तथा व्यवहारवाद के सिद्धांतों को केंद्र में रखते हुए प्रकार्यवाद की समीक्षा करते हैं। व्यवहारवादी इसी बात पर डटे हुए हैं कि व्यावहारिक मनोविज्ञान का ज्ञान जीवन की दिन-प्रतिदिन की समस्याओं का समाधान निकालने में सहयोगी है। मनोविज्ञान द्वारा शुद्ध विज्ञान के रूप में दिये जा रहे योगदान में उन्हें कोई रुचि नहीं हैं, और ऐसा मानने के लिए प्रकार्यवादी अपने आपको गलत नहीं समझते।
- संरचनावाद तथा उसके सिद्धांतों का विरोध करके प्रकार्यवाद ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला दी, इससे मनोविज्ञान के अध्ययन का विषय-चेतना (मस्तिष्क) की संरचना न रहकर चेतना के कार्य हो गये।

- प्रकार्यवादियों ने जानवरों के व्यवहार को अनुसंधान विषय बनाने पर जोर दिया। अबोध शिशुओं, बच्चों तथा मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों पर अनुसंधान की संभावनाओं पर जोर दिया।
- मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों में इस्तेमाल किये जाने वाले तरीकों का भी प्रकार्यवाद के अस्तित्व में आने के बाद विस्तार हुआ।
- आत्म-निरीक्षण के अलावा, मनोवैज्ञानिक मापदंड, मानसिक परीक्षण, साक्षात्कार तथा वस्तुपरक व्यवहार के वस्तुपरक विवरण भी अनुसंधान की विधियों में शामिल किये जाने लगे।

## 5.8 मुख्य शब्द

**प्रकार्यवाद** : प्रकार्यवाद मनोविज्ञान की दूसरी पारंपरिक शाखा है, और मनोविज्ञान की पहली अमरीकी शाखा भी है। प्रकार्यवाद का अभ्युदय संरचनावाद के विरोध स्वरूप हुआ है। प्रकार्यवाद ने मनुष्य के मस्तिष्क के उन कार्यों एवं कार्य-पद्धतियों को अपने अध्ययन का विषय बनाया जो व्यक्ति के सांसारिक कार्यों में उसकी मदद करते हैं तथा इस बात को स्पष्ट करना उनका उद्देश्य रहा कि मानसिक क्रियाएं किस प्रकार अनुकूलन में व्यक्तियों को सहयोग देती हैं। प्रकार्यवाद की इस प्रवृत्ति ने उसे संरचनावाद से अलग हटकर अपनी अलग पहचान बनाने में मदद की, क्योंकि संरचनावाद के अध्ययन का केन्द्र मनुष्य के मस्तिष्क की संरचना मात्र है।

**अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान** : प्रकार्यवादियों की रुचि इस सत्य का उद्‌घाटन करने में थी कि व्यक्तियों के व्यवहार तथा उनकी चेतना पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में किस प्रकार सहयोगी होते हैं, अतः उनका ध्यान पूरी तरह मानव-चेतना के उपयोगी पक्ष तथा व्यवहार पर केंद्रित हो गया। इस प्रकार प्रकार्यवादी आंदोलन ने अमेरिका में व्यावहारिक मनोविज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**शिकागो सम्प्रदाय** : प्रकार्यवाद का आरंभ व्यवस्थित रूप में शिकागो विश्वविद्यालय में हुआ, इसके संस्थापक जॉन डेवी और जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल थे। मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रकार्यवाद पर काम करने के कारण इन शिकागो विश्वविद्यालय मनोवैज्ञानिकों की पहचान शिकागो विचारधारा के रूप में बन गई।

**प्रतिवर्त धनु** : प्रतिवर्त धनु की अवधारणा सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जॉन डेवी की है। परावर्ती चाप संवेदी उत्तेजना तथा प्रेरक तंत्रिका की अनुक्रिया के बीच संयोजन का कार्य करता है। डेवी ने यह समझाने का प्रयास किया था कि व्यवहार अनुकूलन प्रक्रिया में व्यक्ति की मदद किस प्रकार करता हैं। मनोविज्ञान की विषय वस्तु को संपूर्ण जीव के रूप में पहचाना गया क्योंकि यह अपने वातावरण में कार्य करता है।

**चेतना की प्रकार्यात्मक भूमिका** : किसी भी जीवधारी की पर्यावरण से जुड़ी विभिन्न परिस्थितियों के साथ अनुकूलन स्थापित करने के लिए जिन चीजों की आवश्यकता पड़ती है, उनकी पूर्ति करने का काम जीवधारी की चेतना करती है। इस प्रकार चेतना जीवधारी के जीवन और पर्यावरण के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाती है।

**अनुकूल व्यवहार** : जीवधारियों को प्राप्त होने वाले अनुभवों को अर्जित करना, संभाल कर रखना, व्यवस्थित करना और उनका मूल्यांकन करना, मानसिक प्रक्रियाओं का दायित्व है। इन अनुभवों को मानसिक प्रक्रियाएं जीवनधारियों के कार्यों के समय इस्तेमाल करती है। मनोविज्ञान की भाषा में इसे व्यवहार कहा जाता है। हार्वे कार्र ने इन व्यवहारों को दो श्रेणियों में बांटा है – ''अनुकूली व्यवहार'', ''विवेकपूर्ण अथवा समझदारी'' से भरा व्यवहार।

**गत्यात्मक मनोविज्ञान** : गत्यात्मक मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य अभिप्रेरण है। व्यवहार का अध्ययन करते समय वुडवर्थ ने या माना कि किसी व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि उसके मानसिक धरातल पर किस तरह की मनोवैज्ञानिक घटनाएं घटित हो रही हैं। कारण और कार्य संबंधों को केन्द्र में रखते हुए वुडवर्थ ने यह साबित किया कि कोई व्यक्ति जो व्यवहार करता है उसके पीछे मानसिक स्तर पर कारणस्वरूप एक शक्ति उत्पन्न होती है। मनोविज्ञान का उद्देश्य यह पता लगाना है कि कोई व्यक्तिपरक खास प्रकार का व्यवहार क्यों करता है।

## 5.9 पुनरावलोकन प्रश्न

1) प्रकार्यवाद के संस्थापकों के नाम लिखिए।
2) उन पद्धतियों का वर्णन कीजिए जिन्हें प्रकार्यवादियों ने अपनाए।
3) प्रकार्यवादी के अनुसार मनोविज्ञान की परिभाषा क्या है, अथवा प्रकार्यवादियों के अनुसार मनोविज्ञान क्या है?
4) व्यावहारिक मनोविज्ञान से प्रकार्यवाद का क्या संबंध है?
5) प्रकार्यवाद पर विलियम जेम्स के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।
6) मनोविज्ञान के बारे में डेवी के विचार वुण्ट और टिचनर के विचारों से किस प्रकार भिन्न हैं।
7) ऐंजिल के अनुसार प्रकार्यवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि की व्याख्या कीजिए।
8) कार्र ने प्रकार्यवाद में किस प्रकार संशोधन किया है।
9) वुडवर्थ ने विलियम जेम्स और जॉन डेवी के कार्यों को किस प्रकार आगे बढ़ाया?
10) रुकमिक के शब्दों में प्रकार्यवाद की आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।

## 5.10 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*, Harlow: Pearson Education Ltd.

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology*, Wadsworth: Cengage Learning.

Leahey, Thomas H. (2017). *A* History *of Psychology. From Antiquity to Modernity,* Routledge.

Marx, M. H. & Hillix, W. A. (1963). *Systems and Theories in Psychology*, New York: McGraw-Hill.

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). *A History of Modern Psychology*, Wadsworth: Thomson Learning, Inc

## 5.11 चित्रों के संदर्भ

Gouinlock, J. S. (2020). John Dewey: American Philosopher and Educator. https:// www.britannica.com/biography/John-Dewey

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2006). James Rowland Angell: American Psychologist and Educator. https://www.britannica.com/biography/James-Rowland-Angell

Pillsbury, W. B. (1955). Harvey A. Carr: 1873-1954. The American Journal of Psychology, 68 (1), 149 -151 https://www.jstor.org/stable/1418404

Martinez, G. G. (n.d.). Robert Sessions Woodworth: biografía de este psicólogo estadounidense. https://psicologiaymente.com/biografias/robert-sessions-woodworth

## 5.12 ऑनलाइन संसाधन

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2017). Functionalism. https://www.britannica.com/science/functionalism-psychology

Biography (2020). John Dewey. https://www.biography.com/scholar/john-dewey

Encyclopaedia.com (2020). Angell, James Rowland. https://www.encyclopedia.com/ people/medicine/psychology-and-psychiatry-biographies/james-rowland-angell

The Editors of Encyclopaedia Britannica. (2005). Robert S. Woodworth. https://www. britannica.com/biography/Robert-S-Woodworth

**पुनरावलोकन प्रश्नों के उत्तर *(1-2)***

1) जॉन डेवी और जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल
2) अंतर्निरीक्षण, प्रयोगात्मक विधि, अवलोकन, मनोवैज्ञानिक शोध, मानसिक परीक्षण।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY